RNI No. : CHHHIN/2011/40280

पाक्षिक पत्रिका

छत्तीसगढ़ आजतक

वर्ष : 12 • अंक : 24 • अगस्त - द्वितीय 2023 • मूल्य : 40/-

मयारू मुख्यमंत्री

अपने कार्यकाल के 5 साल पूर्ण करने जा रहे मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने अपने कुशल नेतृत्व के दम पर राष्ट्रीय पहचान कायम कर ली है. उनके सामने वर्तमान चुनाव में कांग्रेस को बहुमत से जिताकर लाने की चुनौती है. भाजपा ने सबसे पहले प्रत्याशी घोषित कर बढ़त हासिल कर ली है. देखना है चुनावी ऊँट किस करवट बैठता है.

पप्पू की दहाड़ से थरथराई संसद

दिया लंका दहन और रावण वध का उदाहरण

आदिवासी संस्कृति का संवर्धन

R.O. No. : 12464/7

- पर्व-त्यौहारों के आयोजन के लिए पंचायतों को अब मिल रहा है प्रति वर्ष **10000 रु.** का अनुदान
- **1840** ग्राम पंचायतों को **5-5 हजार रु.** की पहली किस्त जारी

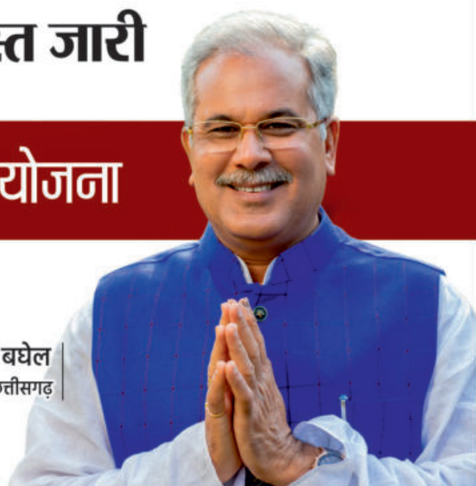

मुख्यमंत्री आदिवासी परब सम्मान निधि योजना

गढ़बो नवा छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ सरकार
भरोसे की सरकार

छत्तीसगढ़ शासन

भूपेश बघेल
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

Visit us : ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in

छत्तीसगढ़ आजतक

वर्ष : 12 ● अंक : 24 ● अगस्त - द्वितीय 2023

संपादक	:	लखन लाल
सलाहकार संपादक	:	सादात अनवर
कार्यकारी संपादक	:	दीपक रंजन दास
विशेष प्रतिनिधि	:	मंजुला कौशिक, पी. मोहन विक्रम जनबंधु, आर.के. वर्मा
कानूनी सलाहकार	:	गिरीशचंद्र शर्मा
प्रबंध संपादक	:	डॉ. डी.पी. देशमुख
सरगुजा प्रभारी	:	अमरेश्वर दुबे

प्रतिनिधि :-

रायपुर	:	भूपेन्द्र वर्मा
दुर्ग	:	रामशरण कौशिक
भिलाई	:	सतीशदास वैष्णव
भिलाई - 3	:	श्यामलाल साहू
राजनांदगांव	:	राहुल गौतम
कबीरधाम	:	सुरेश प्रसाद गुप्ता
कोरबा	:	अजय कुमार
जांजगीर-चांपा	:	समयदास अविनाशी
कटघोरा	:	विकास जायसवाल
कोण्डागांव	:	सुरेश पाटले
नारायणपुर	:	नरेन्द्र देवांगन
जगदलपुर	:	हेमंत कश्यप
धमतरी	:	जियाऊल हुसैनी
बालोद	:	सलीम चौहान
बलौदाबाजार	:	संतोष यादव
तिल्दा-नेवरा	:	दिलीप वर्मा
बोड़ला	:	नवलकिशोर श्रीवास्तव
अंबिकापुर	:	धनंजय दुबे
मनेन्द्रगढ़	:	मनप्रीत सिंह साहनी
रामानुजगंज	:	विकास केसरी
वाड्रफनगर	:	प्रदीप जायसवाल
दल्लीराजहरा	:	कमल शर्मा
गुंडरदेही	:	रमेश चांडक
पाटन	:	उमाशंकर वर्मा
उतई	:	सतीश पारख
बलरामपुर	:	नितेश श्रीवास्तव
दंतेवाड़ा	:	देवकरण बुरड
बिलासपुर	:	सत्येन्द्र प्रकाश सूर्यवंशी

संपादकीय, विज्ञापन, प्रसार कार्यालय

ब्लॉक बी-1, प्रथम तल, बॉम्बे मार्केट, रायपुर (छ.ग.)
भिलाई कार्यालय : जी.ई. रोड, कोसानगर, भिलाई, जिला-दुर्ग (छ.ग.)
संपर्क : 99261 80287, 88895 70726

प्रसार व विज्ञापन विभाग

पत्रिका की सदस्यता व विज्ञापन के लिए संपर्क करें
भूपेन्द्र वर्मा-8889570726, गजेन्द्र-7999139990,
दिनेश यादव-6264374105

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक- लखन लाल के लिए सागर प्रिंटर्स, पुरानी बस्ती, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ब्लॉक बी-1 प्रथम तल, बॉम्बे मार्केट, रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित, **संपादक - लखन लाल**

सर्वाधिक सुरक्षित : किसी भी रूप से सामग्री की नकल प्रतिबंधित है. सभी विवादों का निपटारा रायपुर न्यायालय में होगा.

04

आवरण - कथा

मयारू मुख्यमंत्री

मुखिया चाहे घर का हो या राज्य का, यदि वह सबका ख्याल रखने में सक्षम हो तो परिवार में खुशहाली आकर रहती है. छत्तीसगढ़ भी एक विशाल परिवार ही है जिसमें बस्तर और सरगुजा के आदिवासी, कोरवा जनजाति, मैदानी क्षेत्र के किसान से लेकर युवाओं की बड़ी आबादी अपने मुखिया की ओर हसरत भरी नजरों से देखती है. जब मुखिया इन सबकी...

16

पं. नेहरू के योगदान...

हम आजादी के 77वें वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं, आज के कालखंड में आजादी के बाद में पैदा हुए लोगों की संख्या बहुतायत है, इसलिए अधिकांश आबादी को न गुलामी का कालखंड मालूम है न आजादी के बाद के शुरूआती...

22

सिरपुर...

आज हम बात करने जा रहे हैं भारत की उस प्राचीन धरोहर की जहां न केवल तत्कालीन भारत का दूसरा सबसे बड़ा विश्वविद्यालय था बल्कि जहां व्यापार एवं परिवहन सेवाएं भी विकसित रूप में विद्यमान थीं. इस महानगर...

10	चुनाव	:	दावेदार कैसे हों ?...
12	शख्सियत	:	"पप्पू" की दहाड़ से थरथराई संसद...
26	उपलब्धि	:	छत्तीसगढ़ बना आदिवासियों का स्वर्ग...
36	चर्चा	:	भाजपा के पास नहीं है भूपेश जैसा चेहरा...
38	महिला उत्थान	:	ग्रामोन्मुखी सरकार ने समझा महिलाओं का दर्द...

पुरखों के सपनों का छत्तीसगढ़

लखन लाल

शिक्षा के बढ़ते खर्च से जनता को राहत दिलाने के लिए सरकार ने अंग्रेजी माध्यम के स्कूल और कालेज खोलने का श्रीगणेश किया. निश्चित तौर पर चार-साढ़े चार साल के छोटे से कार्यकाल में इन योजनाओं का अपेक्षित लाभ दिखाई नहीं दे सकता, पर प्रारंभिक रुझान बताते हैं, कि राज्य तेजी से आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो रहा है.

पुरखों के सपनों को पूरा करना किसी भी पीढ़ी को आह्लादित कर सकती है. इस कसौटी पर माटीपुत्र भूपेश बघेल खरा उतरते दिखाई देते हैं. उनके कार्यकाल में देश ने कृषि से लेकर ग्रामीण समृद्धि के एक ऐसे मॉडल को उभरते देखा, जो प्रकृति और पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा के साथ विकास की ओर जाता है. छत्तीसगढ़ के तीसरे मुख्यमंत्री भूपेश बघेल का पहला कार्यकाल अब पूरा होने जा रहा है. वे राज्य के पहले निर्वाचित कांग्रेसी मुख्यमंत्री हैं. पृथक राज्य बनने के बाद पहले मुख्यमंत्री मनोनीत हुए थे. इसके बाद से सत्ता लगातार भाजपा के पास रही. 2018 के विधानसभा चुनाव में पहली बार कांग्रेस ने भूपेश बघेल के नेतृत्व में जबरदस्त बहुमत के साथ सत्ता में वापसी की. इसके साथ ही पुरखों के सपनों के छत्तीसगढ़ का निर्माण प्रारंभ हो गया. छत्तीसगढ़ का प्रभु श्रीराम से गहरा रिश्ता है. दक्षिण कोसल उनका ननिहाल तो है ही, उनके वनवास का एक बड़ा हिस्सा इसी अंचल में बीता जिसकी छाप जगह-जगह विद्यमान है. भूपेश सरकार ने माता कौशल्या मंदिर की स्थापना के साथ ही श्रीराम वनगमन परिपथ को सहेजने और पुनर्जीवित कर छत्तीसगढ़ को वैश्विक धार्मिक पर्यटन के नक्शे पर स्थापित किया. छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा भी कहा जाता है. नदी-नालों से परिपूर्ण छत्तीसगढ़ भी बारिश और सूखे के चक्रव्यूह में फँस गया था. नरवा-गरुवा-घुरवा-बारी योजना से इसका हल ढूँढने की कोशिश भी इस सरकार ने शुरू की. योजना का एक पहलू गोधन की सुरक्षा करते हुए कम्पोस्ट खाद के रास्ते आर्गेनिक उत्पादों के बाजार का दोहन करना भी है. वनोपजों और औषधीय पादपों के प्रसंस्करण और विपणन की व्यवस्था भी राज्य में शुरू हो गई. महिला स्व-सहायता समूहों के उत्पादों को बाजार उपलब्ध कराने के लिए भी योजनाएँ बनीं. इन योजनाओं का अंतिम लक्ष्य गाँवों में रोजगार का सृजन कर उनके जीवन स्तर को ऊपर उठाना और पलायन रोककर उनके साथ होने वाले अपराध की आशंका को कम करना भी था. इससे शहरों पर भी दबाव कम हुआ और लोग गाँव और खेतों की तरफ लौटने लगे. यही राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का भी सपना था. डॉ. खूबचंद बघेल की पुण्यभूमि पर स्वास्थ्य सेवाओं को जन-जन तक पहुंचाने के प्रयास प्रारंभ किये गये. ग्रामीण खान-पान और खेलकूद को भी आगे बढ़ाने के प्रयास किये गये. सरकार मानती है, कि समृद्धि और खुशहाली अकेले धन से नहीं आ सकती. इसके लिए लोक-परम्पराओं और लोकसंस्कृति की समृद्ध विरासत को पुनर्जीवित करना भी जरूरी है. सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता का स्तर काफी गिर चुका था. इसे ठीक करने के लिए सरकार युद्धस्तर पर स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट विद्यालयों की स्थापना कर रही है. इससे महँगे निजी स्कूलों पर निर्भरता कम हो गई. सरकारी क्षेत्र में अंग्रेजी माध्यम के कालेज खोलने की भी शुरुआत की गई है. निश्चित तौर पर चार-साढ़े चार साल के छोटे से कार्यकाल में इन योजनाओं का अपेक्षित लाभ दिखाई नहीं दे सकता, पर प्रारंभिक रुझान आशान्वित करते हैं. छोटे से कालखंड में सिर्फ एक चौथाई गौठान ही रूरल इंडस्ट्रियल पार्क के रूप में सफल हो पाए हैं पर प्रयास जारी हैं. धान का भारी भरकम समर्थन मूल्य न केवल लोगों को बाड़ियों की तरफ जाने से रोक रहा है, बल्कि बागवानी उत्पादों के प्रसंस्करण के क्षेत्र में निवेश को हतोत्साहित कर रहा है. इस क्षेत्र में संतुलन की जरूरत है. स्वास्थ्य एवं शिक्षा संस्थानों की स्थापना तो हो रही है, पर नज़र इनकी संख्या की बजाय गुणवत्ता पर हो तो नतीजे बेहतर आ सकते हैं. सभी क्षेत्रों में अभी बहुत परिश्रम की जरूरत है. संतोष इस बात का है, कि दिशा सही है. यही कारण है, कि स्वयं प्रधानमंत्री इस सरकार की योजनाओं और कार्यक्रमों की लगातार प्रशंसा करते रहे हैं. अन्य राज्यों के दल भी यहाँ के मॉडल का अवलोकन-अध्ययन करने के लिए आ रहे हैं. यह छत्तीसगढ़ राज्य के लिए गर्व की बात है. मात्र साढ़े चार साल के शासन में पुरखों का सपना साकार हो रहा है. अंधेरे को कोसने से बेहतर है एक दीप प्रज्ज्वलित करना.

मा. मल्लीकार्जुन खड़के

मा. राहुल गांधी

मा. प्रियंका गांधी

मा. शैलजा

मा. दीपक बैज

मा. फूलोदेवी नेताम

23 अगस्त | जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं

मान. श्री भूपेश बघेल जी

मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

" फूलों की सुगंध से सुगन्धित हो जीवन आपका,
तारों की चमक से सम्मिलित हो जीवन आपका
उम्र आपकी हो सूरज जैसी, याद रखे हमेशा दुनिया।

कुंवर सिंह निषाद

संसदीय सचिव, छत्तीसगढ़ शासन एवं
विधायक, गुन्डरदेही

जन-जन की खुशहाली के साध्य बने **भूपेश**

मुखिया चाहे घर का हो या राज्य का, यदि वह सबका ख्याल रखने में सक्षम हो तो परिवार में खुशहाली आकर रहती है. छत्तीसगढ़ भी एक विशाल परिवार ही है जिसमें बस्तर और सरगुजा के आदिवासी, कोरवा जनजाति, मैदानी क्षेत्र के किसान से लेकर युवाओं की बड़ी आबादी अपने मुखिया की ओर हसरत भरी नजरों से देखती है. जब मुखिया इन सबकी आकांक्षाओं पर खरा उतरता है तो महज साढ़े चार साल के अरसे में ही राज्य पिछड़ेपन का कंबल हटाकर अग्रणी राज्यों के बीच सिर उठाकर खड़ा हो जाता है. कुछ ऐसा ही आलम है भूपेश बघेल के नेतृत्व में आगे बढ़ रहे छत्तीसगढ़ का. जिसकी पीठ न केवल प्रधानमंत्री थपथपा रहे हैं बल्कि विदेशों में जा बसे छत्तीसगढ़ के युवा भी उनके कायल हैं.

» **छ.ग. आजतक ब्यूरो**

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने छत्तीसगढ़ को पिछले साढ़े चार साल में राज्य को एक ऐसा रास्ते पर लाया है जिस पर चलकर राज्य तेजी से आर्थिक और सामाजिक विकास कर रहा है. यही नहीं संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने और उसे आगे बढ़ाने के भी तमाम उपाय किये जा रहे हैं. संभवत: यह पहली सरकार है जिसने न केवल आदिवासियों की देवगुड़ियों को मान्यता दी बल्कि वहां पूजा पाठ की जिम्मेदारी संभालने वाले बैगा, गुनिया, हाट पहरिया, राज मोहरिया को अनुदान देना भी प्रारंभ किया.

मुख्यमंत्री जानते हैं कि खुशहाली अकेले अर्थोपार्जन से नहीं आती. जीवन में सम्पूर्णता लाने के लिए संस्कृति और उत्सव भी उतने ही जरूरी हैं. इसलिए जब आदिवासी नृत्य महोत्सव का आयोजन वैश्विक स्तर पर प्रारंभ किया गया तो लोगों ने दांतों तले उंगली दबा ली. इस एक कदम से ही भूपेश ने न केवल आदिवासियों में स्फूर्ति का संचार कर दिया बल्कि उनकी विरासत को विश्व पटल पर रखने में भी सफल

'कका' के रूप में अपनी पहचान स्थापित करने वाले भूपेश बघेल ने कृषि क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन की राह सुझाई है. इसकी वजह शायद यही है कि ने स्वयं कृषक परिवार से हैं. खेती-बाड़ी से उनका पुराना नाता है. नागर जोतने से लेकर निंदाई-गुड़ाई, कटाई और लुवाई सभी तरह के काम उन्होंने अपने हाथों से किया है. इसलिए जब वे ट्रैक्टर लेकर खेतों में उतरते हैं तो लोग उन पर कटाक्ष नहीं करते बल्कि उन पर 'मया' बरसाते हैं. कुछ ऐसा ही आलम तब भी होता जब वे गुलाटी मारकर नहर में छलांग लगाते हैं, हथेली पर भौंरा चलाते हैं, गिल्ली डंडा खेलने मैदान में उतर पड़ते हैं. गेड़ी पर चढ़कर तेजी से चलने लगते हैं. जनजीवन से इस तरह उनका जुड़ना लोगों को आल्हादित कर जाता है. छत्तीसगढ़िया ओलम्पिक इसी सोच की पराकाष्ठा है.

प्रवासी भारतीयों ने भी दिखाई रुचि

आदिवासी नृत्य महोत्सव ने दुनिया भर से प्रतिभागियों को यहां आमंत्रित किया. लोग छत्तीसगढ़ी गीत-संगीत पर जमकर थिरके और गाने की भी कोशिशें की. वहीं अमेरिका में जा बसे छत्तीसगढ़ के निवासियों ने भी भूपेश सरकार के कामकाज में रुचि लेना प्रारंभ कर दिया है. नार्थ अमेरिका में छत्तीसगढ़ एसोसिएशन (नाचा) के बैनर तले प्रवासी भारतीय वहां छत्तीसगढ़ की खुशबू तो बिखेर ही रहे हैं, छत्तीसगढ़ के आर्थिक विकास में भी रुचि ले रहे हैं.

हो गए. आज छत्तीसगढ़ की पहचान न केवल देश के भीतर सबसे तेज गति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था के रूप में बल्कि पूरे विश्व में एक अद्भुत राज्य के रूप में बन रही है.

आध्यात्म और धार्मिक पर्यटन

छत्तीसगढ़ की आध्यात्मिक विरासत अति प्राचीन है. रामायणकाल में भी छत्तीसगढ़ का अस्तित्व दण्डकारण्य और दक्षिण कोसल के रूप में प्रकट होता है. यह प्रभु श्रीराम का ननिहाल है जहां आज भी लोग शरीर पर रामनाम का गोदना गुदवाते हैं. श्रीराम को भांजा मानने वाले छत्तीसगढ़ के गांव-गांव में आज भी भांजे के पांव पूजे जाते हैं. इस विरासत को दुनिया के आगे रखने का काम भी मुख्यमंत्री ने किया. कौशल्या मंदिर से इसकी शुरुआत हुई और अब राम-वनगमन परिपथ के जरिये उन स्थलों को पर्यटन केन्द्रों के रूप में विकसित किया जा रहा है जहां-जहां प्रभु श्रीराम ने कुछ वक्त गुजारे. छत्तीसगढ़ का सिहावा क्षेत्र सप्त ऋषियों के आश्रमों के लिए एक विशिष्ट पहचान रखता है. भौगोलिक और प्राकृतिक विविधता से परिपूर्ण छत्तीसगढ़ में पर्यटन की असीम संभावनाएं हैं जिसपर काम शुरू हुआ है.

ऐसे बदल रहा है छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ की समृद्ध अध्यात्मिक विरासत है. इन्हीं में से एक है आध्यात्म की सोंधी महक. हरेली, तीजा-पोरा, छेरछेरा, कमरछट को उन्होंने पुनर्स्थापित किया. पहले जहां पढ़े लिखे लोग छत्तीसगढ़ी बोलने से कतराते थे. वे सहज भाव से छत्तीसगढ़ी बोलते हैं. वहीं अब विश्वविद्यालयों के कुलपति भी सार्वजनिक रूप से गेड़ी चढ़ते हैं. अब आला अधिकारी बोरे बासी खाते हुए अपने वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हैं. छत्तीसगढ़ बोलने में अब किसी को कोई झिझक नहीं है. इस परिवर्तन का जनजीवन के मनोबल पर खासा प्रभाव देखा जा रहा है. यही कारण है कि 35 प्रकार के पारंपरिक व्यंजन गढ़कलेवा के माध्यम से परोसे जा रहे हैं. इसमें मातृशक्ति को भी असीमित रोजगार देने की क्षमता है.

निचले स्तर पर आमदनी सुनिश्चित कर भूपेश ने छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था को भी मजबूत किया है. किसानों को जहां उनकी फसलों का बेहतरीन मूल्य मिल रहा है वहीं समर्थन मूल्य पर खरीदे जाने वाले लघु वनोपजों की सूची 900 गुना बढ़कर 65 तक जा चुकी है. यह भूपेश बघेल सरकार की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है. इसके साथ ही महिला स्व सहायता समूहों के उत्पादों को सी-मार्ट तक पहुंचाने और

भूपेश का अब तक का सफर

भूपेश का राजनीति में प्रवेश युवक कांग्रेस के माध्यम से हुआ. क्षेत्र की राजनीति में चाणक्य कहे जाने वाले जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष वासुदेव चंद्राकर की पारखी नजरों ने जल्दी ही उनकी प्रतिभा को पहचान लिया. भूपेश दुर्ग जिला कांग्रेस के अध्यक्ष बन गए. गांव से ब्लॉक और ब्लॉक से जिला स्तर तक भूपेश ने अपनी छवि एक मेहनती, उन्नत किसान और जुझारू राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में स्थापित कर ली. 1993 में पहली बार पाटन विधानसभा क्षेत्र से चुनाव जीतकर वे मध्यप्रदेश विधानसभा में पहुंचे. इस सीट से लगातार चुनाव जीतने वाले वे एक मात्र नेता है. इससे पहले किसी ने भी यहां से दो बार चुनाव नहीं जीता था. मध्यप्रदेश शासन में उन्हें स्वतंत्र प्रभार के साथ राज्यमंत्री और फिर छत्तीसगढ़ बनने के बाद मंत्री बनने का सौभाग्य मिला. प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के रूप में उनका कार्यकाल बेहद सफल रहा और उनके नेतृत्व में ही भाजपा की 15 साल पुरानी सरकार को उखाड़ कर कांग्रेस पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में लौटी. मुख्यमंत्री के रूप में उनका कार्यकाल शानदार रहा है. पिछले साढ़े चार साल में भूपेश अपनी और छत्तीसगढ़ की आकर्षक छवि बनाने में सफल हुए हैं. इसके पीछे उनका माटी प्रेम और जन समस्याओं के प्रति अनुभव से प्राप्त संवेदना का भाव ही प्रमुख तत्व है. चाहे छत्तीसगढ़ को राजगीत देने का मामला हो या फिर ग्रामीण क्षेत्र को नरवा-गरुवा-घुरवा-बाड़ी की सौगात देने का, उनकी सोच अपने दौर से काफी आगे तक जाती है. छत्तीसगढ़ में कृषि और ग्रामोद्योग को नए ढंग से परिभाषित कर उन्होंने दरअसल, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के सपनों के भारत को ही लघु रूप में आकार दिया है. आज गांव के गोठान ग्रामीण औद्योगिक पार्क के रूप में विकसित होकर आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र बन रहे हैं.

गोठानों को आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र बनाकर भी उन्होंने स्थानीय तौर पर रोजगार पैदा करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की है. यह पैसा अंतत: शहरों में ही खर्च हुआ जिसका असर पूरी अर्थव्यवस्था पर पड़ा.

शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में स्वामी आत्मानंद स्कूल एवं महाविद्यालयों की स्थापना, हाट बाजार क्लिनिक, तकनीकि और मेडिकल शिक्षा को विस्तार देने स्व. चंदूलाल चंद्राकर मेडिकल कॉलेज का अधिग्रहण सरगुजा और महासमुंद में मेडिकल कॉलेज की स्थापना जैसे महत्वपूर्ण कार्य छत्तीसगढ़ को शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में नई पहचान बनाने में सफलतापूर्वक योगदान दे रहे हैं. भ्रष्टाचार के खिलाफ कड़ी कार्रवाई के साथ ही नौकरशाही को जानापेक्षी बनाने के लिए भूपेश सरकार द्वारा किए गए प्रयास इस सरकार के प्रति जन विश्वास पैदा करने में सफल हुए हैं. भूपेश बघेल ने अपनी राजनैतिक यात्रा के दौरान कांग्रेस संगठन को जुझारू और एकजुट बनाने में भी अग्रणी और विशेष भूमिका का निर्वहन किया है.

कांग्रेस के प्रदेश कार्यालय से लेकर जिला कार्यालय तक सर्वसुविधायुक्त भवनों का निर्माण उन्हीं की दूरदर्शिता और सक्रियता का प्रमाण है. मुख्यमंत्री के रूप में सफल मुख्यमंत्री संगठन में सफल संगठक और राजनेता के रूप में छत्तीसगढ़ की आमजन में छत्तीसगढ़ की अस्मिता आर्थिक और सामाजिक उन्नति के प्रतीक राजनेता की छवि स्थापित करने वाले, छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक विरासत को नई पहचान देने वाले, ग्रामीण कला संस्कृति, खेलकूद, तीज त्यौहार पर लोहा राष्ट्रीय स्तर पर मनवाने वाले भूपेश बघेल अपने जीवन में और अधिक सफलता प्राप्त करें. स्वास्थ्य चिरायु हो इसी शुभकामनाओं के साथ छत्तीसगढ़ आजतक परिवार की ओर से बधाई एवं शुभकामनाएं.

हवाओं में परिजनों का प्यार हो
दोस्तों की दोस्ती ही उपहार हो
महके जिंदगी यूँ कि
आज ही बसंत हो, आज ही बहार हो
जन्मदिन की खुशियां बेशुमार हो...

भाई भूपेश, आपको जन्मदिन की

हार्दिक शुभकामनाएं...

गिरीश देवांगन

अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ खनिज विकास निगम

बीजेपी के भय का भूत

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की सीट पाटन विधानसभा से भारतीय जनता पार्टी ने दुर्ग सांसद विजय बघेल को टिकट देकर सियासी बिसात पर एक नया दाँव खेला है. सियासी पंडित अपने-अपने तरीके से इसकी समीक्षा कर रहे हैं. माना जा रहा है, कि इस दांव से कुर्मी बहुल पाटन विधानसभा क्षेत्र में भाजपा-कांग्रेस के बीच कुर्मी वोटों का बटवारा हो जाएगा. निश्चित रूप से मुख्यमंत्री होने की वजह से भूपेश बघेल की पाटन में एक अच्छी साख है और उनका पलड़ा भारी होने की संभावना ही अधिक है. पर यदि इस सीट पर भाजपा प्रत्याशी विजय बघेल की हार होती है, तो उनके राजनीतिक कद को बट्टा लग जाएगा. विजय इस समय लोकसभा में सांसद हैं. वैसे सियासी पंडितों के अनुसार कका-भतीजा में कड़ी रोमांचक टक्कर होगी और किसी के भी जीत-हार का अंतर नजदीकी वोटों से होगा. यह सीट चुनाव में राष्ट्रीय मीडिया के आकर्षण का केन्द्र होगी.

» छ.ग. आजतक ब्यूरो

दरअसल, भाजपा हाईकमान ने सांसद विजय बघेल को टिकट देकर एक नया दाँव खेला है. भाजपा मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की उन्हीं के निर्वाचन क्षेत्र में घेराबंदी करना चाहती है. इससे वे अन्य क्षेत्रों में पार्टी के दूसरे प्रत्याशियों का प्रचार-प्रसार नहीं कर पाएंगे. इससे कांग्रेस का ओवरऑल प्रदर्शन प्रभावित हो सकता है, लेकिन ऐसा कुछ भी होने नहीं जा रहा है.

भाजपा ने बीते 15 वर्षों तक छत्तीसगढ़ में राज किया. इस दौर में ओबीसी, एससी, एसटी वर्ग कमजोर हुआ. उनमें निराशा का भाव देखा गया, इसीलिए तीनों वर्ग ने एक होकर बीते चुनाव में भाजपा को पटकनी दी और उनकी सीटें पिछले चुनाव में 15 के आँकड़े पर सिमट गई. इसलिए भाजपा हाई कमान ने विस चुनाव की घोषणा होने से ही पहले 21 संभावित प्रत्याशियों के नामों की घोषणा कर दी. ऐसा प्रदेश के चुनावी इतिहास में पहली बार देखने को मिला.

पिछले कुछ महीनों में भाजपा ने जातिवादी राजनीति को आगे करने का मजबूत इशारा किया है. माना जाता है, कि ऐसा करके वह ओबीसी वर्ग की दावेदारी को कमजोर करना चाहती है. इसकी एक बड़ी वजह यह है, कि भूपेश बघेल के मुख्यमंत्री बनने से किसान, मजदूर और पिछड़ा वर्ग मजबूत हुआ है. भाजपा जातिवादी राजनीति को इसका सबसे मजबूत काट मानती है.

भाजपा पहले भी खेल चुकी हैं दांव

भाजपा ने इससे पहले भी इस तरह के सियासी दाँव खेले हैं. अजीत जोगी के खिलाफ आदिवासियों के बड़े चेहरे नंदकुमार साय को भाजपा ने चुनावी समर में उतारा था. साय के चुनाव हारने से आदिवासी मुख्यमंत्री की मांग कमजोर हुई थी. अब सवाल यह है, कि बीजेपी एक सांसद को मुख्यमंत्री के खिलाफ चुनाव में उतार कर क्या ओबीसी वर्ग को कमजोर करना चाहती है? चूंकि विजय बघेल वर्तमान में दुर्ग लोकसभा से सांसद है. वे पिछड़ा वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं. पिछले 10 वर्षों से सर्वकुर्मी समाज के अध्यक्ष भी हैं. इसीलिए समाज

में उनकी पैठ भी है.

कुर्मी समाज के वोटों का बटवारा होने से यह वर्ग इसलिए आहत होगा, कि भूपेश या विजय में से किसी एक को इस चुनाव में अपनी साख गवाँनी होगी. ओबीसी के एक बड़े चेहरे के कमजोर होने से पार्टी में नेतृत्व की कमान पुन: अगड़ों के हाथों में चली जाएगी. इस अवधारणा को भी बल मिलेगा, कि ओबीसी में नेतृत्व क्षमता का अभाव है. यह बीजेपी के राजनीतिक षड्यंत्र का हिस्सा है. क्योंकि बीजेपी के 15 वर्षों के शासन में ये चेहरे लगभग हाशिए पर थे. अब इनके हाथों में झुनझुना है.

एकाएक अरुण साव को पार्टी का अध्यक्ष बनाना, नारायण चंदेल को नेता प्रतिपक्ष और विजय बघेल को चुनाव घोषणा पत्र समिति का संयोजक बनाना पार्टी की राजनीतिक मजबूरी थी. विपक्ष में रहते हुए भाजपा को एससी, एसटी और पिछड़ा वर्ग याद आते हैं, पर सत्ता आते ही भाजपा का चाल, चरित्र और चेहरा बदल जाता है. भाजपा के इतिहास में यह भी दर्ज है, कि उत्तर प्रदेश में कल्याण सिंह और मध्य प्रदेश में उमा भारती, पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बंगारू लक्ष्मण ये सभी पिछड़े वर्ग के चेहरे थे, जिन्हें कोई ना कोई कारण बताकर हाशिए पर डाला गया. यही हाल छत्तीसगढ़ में भी देखने को मिला. सीएम चेहरे के रूप में दिलीप सिंह जूदेव, रमेश बैस, बलिराम कश्यप, नंदकुमार साय, ताराचंद साहू, ननकीराम कंवर जैसे दबंग माटीपुत्रों को पहले प्रोजेक्ट किया गया, फिर हाशिये पर डाल दिया गया.

राजनीतिक हल्कों में यह भी चर्चा का विषय है, कि भाजपा की कथनी और करनी में अंतर है. भाजपा हाई कमान ने पहले चरण में जिन 21 विधानसभा क्षेत्र से टिकट के लिए नामों की घोषणा की है उसमें एससी के 1, ओबीसी वर्ग से 10 और एसटी के 10 का नाम शामिल है. वहीं दूसरी तरफ सवर्ण सीटों के प्रत्याशियों की घोषणा नहीं की गई. यह भाजपा का अपना राजनीतिक गणित है. जो फासिज्म के करीब है. ऐसा राजनीतिक समीक्षकों का कहना है.

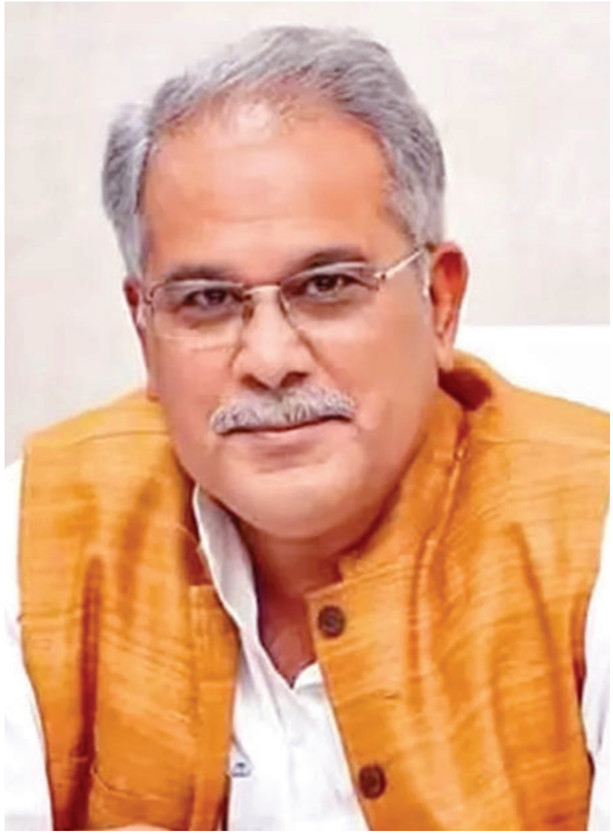

क्र.	विधानसभा क्षेत्र		उम्मीदवार का नाम
1.	प्रेमनगर, 04	-	भूलन सिंह मरावी
2.	भटगांव, 05	-	लक्ष्मी राजवाड़े
3.	प्रतापपुर(अजजा), 06	-	शकुंतला सिंह पोर्थ
4.	रामानुजगंज (अजजा), 07	-	रामविचार नेताम
5.	लुन्ड्रा (अजजा), 09	-	प्रबोध मिंज
6.	खरसिया, 18	-	महेश साहू
7.	धरमजयगढ़, 19	-	हरिश्चंद राठिया
8.	कोरबा, 21	-	लखनलाल देवांगन
9.	मरवाही (अजजा), 24	-	प्रणव कुमार मरपच्ची
10.	सरायपाली (अजा), 39	-	सरला कोसरिया
11.	खल्लारी, 41	-	अलका चंद्राकर
12.	अभनपुर, 53	-	इंद्रकुमार साहू
13.	राजिम, 54	-	रोहित साहू
14.	सिहावा (अजजा), 56	-	श्रवण मरकाम
15.	डौंडी लोहारा(अजजा), 60	-	देवलाल हल्बा ठाकुर
16.	पाटन, 62	-	विजय बघेल, सांसद दुर्ग
17.	खैरागढ़,73	-	विक्रांत सिंह
18.	खुज्जी, 77	-	गीता घासी साहू
19.	मोहला-मानपुर (अजजा), 78	-	संजीव साहा
20.	कांकेर (अजजा), 81	-	आशाराम नेताम
21.	बस्तर (अजजा),85	-	मनीराम कश्यप

प्रत्याशी चयन की अग्नि परीक्षा
दावेदार कैसे हों ?

» डॉ. डी.पी. देशमुख

विधानसभा चुनाव बिल्कुल करीब है. विभिन्न राजनीतिक दलों में टिकिट दावेदारों की भीड़ अभी से शुरू हो गई है. सभी दलों की ओर से ऐसा कहा जाता है कि योग्य और जीतने वाले कार्यकर्ताओं को टिकट दी जायेगी लेकिन योग्यता और जीतने का पैमाना क्या है. क्या चाल-चरित्र और चेहरा जिसे एक पैमाना होना चाहिए. यह एक जुबानी नारा बनकर रह गया है? यह प्रश्न इसलिए उठता है कि टिकिट बटवारे में पूंजीपति, संदिग्ध पृष्ठभूमि वाले लोग और सेवा निवृत्त होने वाले या सेवा निवृत्ति लेकर तमाम नौकरशाह भी बड़ा हिस्सा मार लेते है और वर्षों से पार्टी की दरी बिछाने वाला झंडा लेकर संघर्ष करने वाला और संघर्षशील कार्यकर्ता भी टिकट से वंचित रह जाता है. वर्तमान में देखा जाए तो छत्तीसगढ़ के प्रमुख राजनीतिक दलों में ऐसे पूंजीपति और नौकरशाहों की काफी हद तक पैठ बन चुकी है और कई लोग टिकट प्राप्त कर विधायक, सांसद बनने में सफल भी हुए हैं. यदि नगरीय निकाय चुनावों पर दृष्टिपात करें तो बड़ी संख्या में शराब, सट्टा, जुआ और संदिग्ध कार्यों में संलग्न तत्व न केवल जीत दर्ज की है बल्कि महत्वपूर्ण पदों पर भी काबिज हैं. पार्षद और महत्वपूर्ण पद की सिढ़ी प्राप्त करने वाले ऐसे तमाम चेहरे विधानसभा चुनाव में भी अपनी दावेदारी पेश करने में काफी आगे दिखाई दे रहे हैं. सरसरी दृष्टि से देखा जाए तो शहरी क्षेत्रों में और खासकर प्रदेश के प्रमुख विपक्षी दल भाजपा में ऐसे चेहरों की भरमार दिखाई दे रही है.

राजनीति में पैसे का वर्चस्व बढ़ जाने, खर्चीले चुनावों और मतदाताओं में वोट के बदले नोट लेने की शर्मनाक प्रवृत्ति ने राजनीति को पूरी तरह प्रदुषित कर दिया है. विधायक एवं सांसद बनने के बाद निजी स्वार्थ और लेनदेन के चलते विधायकों एवं सांसदों द्वारा ऐसे लोगों को एल्डरमेन, पार्टी का पदाधिकारी या प्रतिनिधि बना दिया जाता है, जिनका राजनीति और जनसेवा से कोई लेना देना नहीं है. ऐसे संदिग्ध तत्व मौके की तलाश मे रहते हैं और दुर्भाग्य जनक स्थिति यह है कि उन्हें सफलता भी मिल जाती है. यही कारण है कि विधानसभा चुनाव से पहले ही बौद्धिक और राजनीति क्षेत्रों में यह चर्चा चल पड़ी है कि विधानसभा का टिकट पाने में वास्तव में योग्य और अपने दल के प्रति समर्पित संघर्ष और जनसेवा में अपनी भागीदारी से पहचान बनाने वाले कार्यकर्तागण उपेक्षा के शिकार तो नहीं हो जाएंगे?

ऐसी चर्चा है कि प्रदेश के प्रमुख राजनीतिक दल कांग्रेस और भाजपा में नए चेहरों को अवसर दिए जाएंगे. नए दल आम आदमी पार्टी और पूर्व कांग्रेस नेता अरविंद नेताम के नेतृत्व में आदिवासी समाज के नाम पर चुनाव लड़ने की घोषणा की जा चुकी है. जाहिर है कि इनमें अधिकतर नए चेहरे ही होंगे लेकिन छत्तीसगढ़ की राजनीति में कांग्रेस और भाजपा के अतिरिक्त अन्य दल अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज करा पाएंगे इसमें संदेह हैं. चर्चा यह भी है कि कांग्रेस को क्षति पहुंचाने के लिए ही अन्य पार्टियां सारी कवायद कर रही है. छत्तीसगढ़ में यह विधानसभा चुनाव इसलिए भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया हैं कि वर्तमान कांग्रेस सरकार ने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ को अपनी संस्कृति, परंपरा और पुरखों की विरासत से जोड़कर एक नई राजनीतिक और सामाजिक चेतना जागृत करने की कोशिश की है और उसमें सफलता भी मिली है. कुछ लोगों को यह नई चेतना खटक रही है और ऐसे तत्व की भूपेश सरकार को धक्का देने की भरपूर कोशिश करेंगे. जाहिर हैं जातिवाद, क्षेत्रवाद और पूंजीवाद का खेल खेलने की कोशिश अवश्य होगी कांग्रेस और भाजपा में लंबे समय से पद प्रतिष्ठा प्राप्त कर पूंजी बटोरने वाले लोगों की जगह नए चेहरे लाए जाने पर पुराने मठाधीश कहीं जाहिर और कहीं आंतरिक तौर पर चुनाव की गणित बिगाड़ने का प्रयास कर सकते हैं. यदि पूरी ईमानदारी से दोनों प्रमुख दलों का नेतृत्व नए चेहरे के रूप में पार्टी और जन सेवा से जुड़े कार्यकर्ताओं को टिकट देने में साहस का परिचय देता हैं तो निश्चित रूप से प्रदेश की राजनीति में व्यापक परिवर्तन आ सकता है सफलता किसको मिलेगी यह भविष्य की गर्भ में है.

23
August
Happy
Birthday
भाई भूपेश बघेल, मुख्यमंत्री
समाज में रहकर समाज की सेवा करना धर्म है...
आप जैसे लोगों का समाज में होना हमारे लिए गर्व है...
आपको जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं...
तेज बहादुर बंछोर
अध्यक्ष
छत्तीसगढ़ भातृ संघ, दुर्ग

मणिपुर

"पप्पू" की दहाड़ से थरथराई संसद

- सरकार पर लगाया अहंकारी होने का आरोप
- दिया लंका दहन और रावण वध का उदाहरण
- कहा – पूरे देश में केरोसीन छिड़क रही भाजपा
- मणिपुर को जलने दिया, हुई हिन्दुस्तान की हत्या

सोशल मीडिया ने जिस वायनाड सांसद राहुल गांधी को "पप्पू" कहकर खारिज करने की कोशिश की उसकी दहाड़ से पूरी संसद थरथरा गई. मणिपुर पर अपनी बात रखते हुए राहुल गांधी ने केन्द्र सरकार पर मणिपुर को आग लगाने और वहां हिन्दुस्तान का कत्ल करने का आरोप लगाया. राहुल ने कहा कि केन्द्र सरकार पूरे देश में केरोसीन छिड़क रही है जिसे बस एक चिंगारी का इंतजार है. मणिपुर में इसी केरोसीन को चिंगारी दिखा दी गई और वहां कत्लेआम शुरू हो गया. आज मणिपुर दो भागों में बंट गया है. वहां जमकर हिंसा हो रही है जिसमें हिन्दुस्तान का कत्ल हो रहा है, देश की हत्या हो रही है. केन्द्र सरकार चाहती तो मणिपुर को सेना के हवाले कर वहां हिंसा को रोक सकती थी, पर उसने ऐसा नहीं किया.

अविश्वास प्रस्ताव पर अपनी बात रखते हुए उनके तेवर ने लोकसभा को चकित कर दिया. सत्ता पक्ष के सांसद केवल इतना ही कह पाए कि इसका सूद समेत जवाब दिया जाएगा. हालांकि, स्पीकर ने राहुल को अपनी बात रखने का पूरा अवसर दिया. राहुल ने इशारों-इशारों में कह दिया कि पूरे देश को साम्प्रदायिक संघर्ष की आग में झोंककर भाजपा अपने मंसूबों को पूरा करने की कोशिश कर रही है उन्होंने इसके खतरों से भी देश को आगाह करने की कोशिश की. राहुल के भाषण में तीखे व्यंग्य भी थे और सीधे सपाट आरोपों का चाबुक भी. प्रस्तुत है लोकसभा में राहुल के भाषण के मुख्य अंश -

दिमाग से नहीं दिल से कही बातें

राहुल ने कहा कि पिछली बार संसद में अपने वक्तव्य से उन्होंने भाजपा को कष्ट पहुंचाया था. अदानी पर इतना फोकस किया था कि भाजपा के वरिष्ठ नेताओं को कष्ट हो गया. इस कष्ट का असर प्रधानमंत्री तक भी पहुंचा होगा. इसके लिए वे माफी मांगना चाहते हैं. फिर चुटकी लेते हुए उन्होंने कहा कि आज भाजपा के सांसदों को डरने की जरूरत नहीं है क्योंकि वे अदानी पर बात नहीं करेंगे. वे जानते हैं कि दिल से कही गई बातें सीधे दिल में उतरती हैं. इसलिए आज वे दिमाग से नहीं बल्कि दिल से बोलेंगे. बस एक दो गोले मारेंगे, पर किसी व्यक्ति विशेष को निशाना नहीं बनाएंगे.

» छ.ग. आजतक ब्यूरो

सुप्रीम कोर्ट से राहत मिलने के बाद राहुल गांधी ने लोकसभा में जोरदार वापसी की. राहुल ने व्यंगात्मक लहजे में अपनी बात शुरू की. उन्होंने कहा कि आज वे अदानी के बारे में नहीं बोलेंगे. किसी के खिलाफ व्यक्तिगत दोषारोपण नहीं करेंगे. उन्होंने सरकार को अहंकारी बताते हुए मणिपुर हिंसा का मामला उठाया. उन्होंने कहा कि वहां सरकार ने हिन्दुस्तान का कत्ल कर दिया. यह सरकार पूरे देश में केरोसीन छिड़क रही है. साम्प्रदायिक तनाव पैदा कर रही है. स्थिति विस्फोटक है और एक मामूली चिंगारी से कहीं भी आग भड़क सकती है.

अपनी पदयात्रा का जिक्र करते हुए राहुल ने कहा कि पहले उनके मन में भी अहंकार था. उन्हें लगा था कि वे प्रतिदिन 25 किलोमीटर यूं ही चल देंगे. पर कुछ ही दिनों बाद उनके घुटनों में इतनी तकलीफ हुई कि उठना तक मुश्किल हो गया. ऐसे में एक 12 साल की बच्ची ने उनकी हौसला अफजाई की. पूरा देश उनके साथ खड़ा हो गया. तब उन्हें लगा कि यह देश की एक आवाज है, उन करोड़ों लोगों की आवाज जो अपने दुःख, दर्द, कष्टों को सरकार के साथ साझा करना

चाहते हैं. पर अहंकारी सरकार के कानों तक इस आवाज को पहुंचने नहीं देती.

जब एक बच्ची ने तोड़ा अहंकार

वायनाड सांसद ने कहा कि पिछले 130 दिनों में वे भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक गए. समुद्र तट से शुरू होकर उनकी यह यात्रा कश्मीर की बर्फीली पहाड़ियों तक गई. लोगों ने उनसे यात्रा का मकसद पूछा पर उनके पास कोई जवाब नहीं था. उन्हें लगता था कि प्रतिदिन 10 किलोमीटर दौड़कर उन्होंने स्वयं को तैयार कर लिया है. प्रतिदिन 25 किलोमीटर चलना कोई बड़ी बात नहीं होगी. पर यात्रा शुरू करने के बाद घुटनों में ऐसा दर्द शुरू हुआ कि सारा अहंकार चूर-चूर हो गया. उठना तक मुश्किल हो गया. तब एक बच्ची ने आकर उनसे कहा कि वह उनके साथ चल रही है. फिर उन्हें लगा कि पूरा देश साथ चल रहा है. इसके बाद यात्रा आसान हो गई.

राहुल के वक्तव्य का मूल पाठ

पिछली बार अपने वक्तव्य से मैंने आपको कष्ट पहुंचाया था. इतने जोरों से अदानी पर फोकस किया कि जो आपके सीनियर नेता हैं, उन्हें कष्ट हुआ. वह जो कष्ट हुआ उसका असर शायद आप पर भी गया होगा, जिसके लिए मैं आपसे माफी मांगता हूँ. मगर आज बीजेपी के मित्रों को डरने की जरूरत नहीं है. आज भाषण अदानी पर नहीं होगा. आप रिलैक्स कर सकते हैं, शांत रह सकते हैं. रूमी ने कहा था कि जो शब्द दिल से आते हैं वो शब्द दिल में जाते हैं. इसलिए आज दिमाग से नहीं दिल से बोलना चाहता हूं. आज आक्रमण नहीं करूंगा. एक दो गोले जरूर मारूंगा पर इतना नहीं मारूंगा.

पिछले साल 130 दिन के लिए मैं भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक गया. समुद्र के तट से कश्मीर की बर्फीली पहाड़ी तक, यात्रा अभी खत्म नहीं हुई है, यात्रा अभी जारी है. बहुत से लोगों ने यात्रा के दौरान और यात्रा के बाद मुझसे मेरा लक्ष्य पूछा. पहले मैं जवाब नहीं दे पाता था. शायद मुझे ही नहीं मालूम था कि मैंने यह यात्रा क्यों शुरू की. जब मैंने यात्रा शुरु की तो मेरे मन में केवल यही था कि मैं लोगों से मिलना चाहता हूँ, उन्हें जानना चाहता हूँ. धीरे-धीरे यह बात समझ में आने लगी कि जिस मुल्क से मुझे प्यार था, जिस चीज के लिए मैं

फिर निकलेगी भारत जोड़ो यात्रा

राहुल गांधी ने पिछले साल सितंबर में भारत जोड़ो यात्रा निकाली थी. ये यात्रा कन्याकुमारी से श्रीनगर तक थी. अब राहुल गांधी दूसरी भारत जोड़ो यात्रा निकालेंगे. यह गुजरात से मेघालय तक होगी. महाराष्ट्र कांग्रेस के अध्यक्ष नाना पटोले ने कहा कि राहुल गांधी की पहली भारत जोड़ो यात्रा को अच्छा रिस्पांस मिला था. इसलिए अब दूसरी भारत जोड़ो यात्रा निकालने की तैयारी कर ली गई है. पटोले ने कहा कि जिस वक्त राहुल भारत जोड़ो यात्रा निकालेंगे, उसी टाइम महाराष्ट्र कांग्रेस के नेता अपने राज्य में ऐसी यात्रा निकालेंगे.

मरने को तैयार था, जिस चीज के लिए मैं मोदी जी की जेल में जाने को तैयार था. जिस चीज के लिए मैंने दस साल तक गालियां खाई. उस बात को मैं समझना चाहता था. सालों से मैं हर रोज 8-10 किलोमीटर दौड़ता था. मेरे दिमाग में था कि जब मैं 10 किलोमीटर दौड़ सकता था तो 25 किलोमीटर चलना कोई बड़ी बात नहीं होगी. आज मुझे लगता है कि वह अहंकार था. मगर भारत अहंकार को एक सेकंड में मिटा देता है. 2-3 दिन में मेरे घुटनों में जबरदस्त दर्द शुरू हो गया. मेरा अहंकार चूर-चूर हो गया. जिस अहंकार के साथ मैं हिन्दुस्तान को देखने निकला था, वह गायब हो गया. रोज मैं डर-डर के चलू कि क्या मैं कल चल पाऊंगा. जब भी यह डर बढ़ता था कहीं न कहीं कोई न कोई शक्ति मेरी मदद करती थी. एक दिन मैं सह नहीं पा रहा था कि एक छोटी से लड़की ने आकर मुझे एक चिट्ठी दी. चिट्ठी में लिखा था कि "राहुल डोन्ट वरी, आई ऐम वाकिंग विथ यू." सिर्फ उसने ही नहीं बल्कि लाखों लोगों ने मेरी मदद की.

शुरुआत में जब कोई किसान आता था, मैं उसे अपनी बात बताता था. पर जब मुलाकातियों की संख्या बढ़ती गई तो बोलने की मेरी इच्छा जाती रही. भीड़ आवाज लगाती थी - 'भारत जोड़ो भारत जोड़ो'. मैंने लोगों की बातें सुनना शुरू कर दिया. हर रोज सुबह 6 बजे से रात के 7-8 बजे तक गरीब, बिजनेसमैन, किसान मजदूर सबकी बातें सुनने लगा. मैं चलता गया और बातें सुनता गया और फिर मेरे पास एक किसान आया उसके हाथ में रुई थी. उसने कहा, राहुल जी, बस यही बचा है मेरे खेत का और कुछ बचा नहीं है. मैंने पूछा आपको बीमा का पैसा मिला. किसान ने मेरा हाथ पकड़ा और कहा कि बीमा का पैसा नहीं मिला. हिन्दुस्तान के बड़े उद्योगपतियों ने वह मुझसे छीन लिया. मगर इस बार बड़ी अजीब सी चीज हुई. जब मैंने किसान को देखा और वह मुझसे बोल रहा था तो वह जो उसके दिल में दर्द था, वह मेरे दिल में आ गया. इसके बाद यात्रा बदल गई. मुझे भीड़ की आवाज सुनाई देनी बंद हो गयी, केवल इसी व्यक्ति की बातें मुझे सुनाई देने लगी. उसका दुःख, उसका क्रोध मुझ तक पहुंचने लगा.

भाइयों और बहनों लोग कहते हैं कि यह देश है, कोई कहता है यह अलग अलग भाषाएं हैं, कोई कहता है यह जमीन है, यह मिट्टी है, कोई सोना कहता है तो कोई धर्म. पर सच्चाई यह है कि यह देश सिर्फ एक आवाज है. इस देश के लोगों की आवाज है. पर सच्चाई यह है कि यह देश सिर्फ एक आवाज है जिसमें लोगों का दर्द है, दुख है, कठिनाइयां हैं. इसे सुनने के लिए अपने अहंकार को, आकांक्षाओं को, सपनों को परे करना पड़ेगा. जब तक हम अपने अहंकार को, नफरत को नहीं मिटाते, यह आवाज सुनाई नहीं देगी.

यह पूछा जा सकता है कि यह बात मैंने अविश्वास प्रस्ताव के बीच क्यों रखी. कुछ ही दिन पहले मैं मणिपुर गया था. हमारे प्रधानमंत्री नहीं गए क्योंकि उनके लिए मणिपुर हिन्दुस्तान नहीं है. आज की सच्चाई यह है कि मणिपुर नहीं बचा है. मणिपुर को आपने दो भाग में बांट दिया है, तोड़ दिया है. मैं वहां रिलीफ कैम्प में गया. मैंने वहां महिलाओं से बात की. बच्चों से बात की. जो हमारे प्रधानमंत्री जी ने आज तक नहीं किया. कैम्प में एक महिला कहती है- एक ही बच्चा था मेरा, मेरी आंखों के सामने उसे गोली मार दी गई. मैं पूरी रात, उसकी लाश के साथ लेटी रही. और फिर मुझे डर लगा, मैने अपना घर छोड़ दिया. जो कुछ मेरे पास था सब छोड़ दिया. सिर्फ जो कपड़े पहने हैं, वही रह गया है. एक फोटो निकालती है, कहती है बस यही बचा है मेरे पास. आप अपने बच्चे की कल्पना कर उस दृश्य को समझने की कोशिश करें. इन्होंने मणिपुर में केवल मणिपुर नहीं, मणिपुर में हिन्दुस्तान की हत्या की है, उसका कत्ल किया है, हिन्दुस्तान का मर्डर किया है. जैसा मैंने भाषण के शुरुआत में बोला, भारत एक आवाज है. भारत हमारी जनता की आवाज है, दिल की आवाज है. उस आवाज की हत्या आपने मणिपुर में की. इसका मतलब भारत माता की हत्या आपने मणिपुर में की. भारत माता को आपने मणिपुर में लोगों को मारकर भारत की हत्या की है. आप देश द्रोही हो. आप देशभक्त नहीं हो. आप देश प्रेमी नहीं हो. इसीलिए आपके प्रधानमंत्री मणिपुर में नहीं जा सकते थे, क्योंकि आपने वहां देश की हत्या की है, हिन्दुस्तान की हत्या की है. भारत माता की हत्या की है. मणिपुर में, लोगों के दिल में सवाल उठता है आप भारत माता के रखवाले नहीं हो. आप भारत माता के हत्यारे हो. आपने मेरी मां की हत्या की है, मणिपुर में. हर रोज, जब तक आप हिंसा को बंद नहीं करोगे, तब तक आप हर रोज मेरी मां की हत्या कर रहे हो. हिन्दुस्तान की सेना, एक दिन में मणिपुर में शांति ला सकती है. लेकिन आप उसका प्रयोग नहीं कर रहे हो, क्योंकि आप मणिपुर में हिन्दुस्तान को मारना चाहते हो.

अगर मोदी जी मणिपुर में हिन्दुस्तान की आवाज नहीं सुनते हैं, अगर हिन्दुस्तान के दिल की आवाज नहीं सुनते हैं, तो वह किसकी आवाज सुनते हैं. वो केवल दो लोगों की आवाज सुनते हैं. देख लीजिये अदानी जी के लिए मोदी जी ने क्या काम किया है. जैसे रावण दो ही लोगों की सुनता था, मेघनाद और कुंभकरण की, वैसे ही नरेन्द्र मोदी केवल दो लोगों की सुनते हैं, अमित शाह और अदानी की.

भाईयों और बहनों, लंका को हनुमान ने नहीं जलाया था. लंका को रावण के अहंकार ने जलाया था. राम ने रावण को नहीं मारा था. खुद रावण के अहंकार ने रावण को मारा था. आप पूरे देश में केरोसीन फेंक रहे हो, आपने मणिपुर में केरोसीन फेंकी और फिर चिंगारी लगा दी. अब आप हरियाणा में कर रहो हो. पूरे देश को आप जलाने में लगे हो. आप पूरे देश में भारत माता की हत्या कर रहे हो.

ऐसे मिला यात्रा का मकसद

राहुल ने कहा कि यात्रा के आरंभिक दिनों में जब भी कोई उनसे मिलने आता तो वे उससे अपने दिल की बात करने लगते. पर यह सिलसिला जल्द ही टूट गया. उन्हें लगा कि लोगों के पास उनसे कहने के लिए काफी कुछ है. फिर वो उनकी बातों को ध्यान से सुनने लगे. इसके बाद तो ऐसा हो गया कि जब कोई उनसे अपने दिल की बात कहता तो बाकी शोरशराबे की बातें कानों तक पहुंचनी ही बंद हो गईं. हर रोज सुबह 6 बजे से रात के 7-8 बजे तक गरीब, बिजनेसमैन, किसान मजदूर सबकी बातें सुनने लगा. इससे देश को जानने का मौका मिला. जनता का दर्द, उसकी कठिनाइयां, उसकी इच्छाओं-आकांक्षाओं को जानने का मौका मिला.

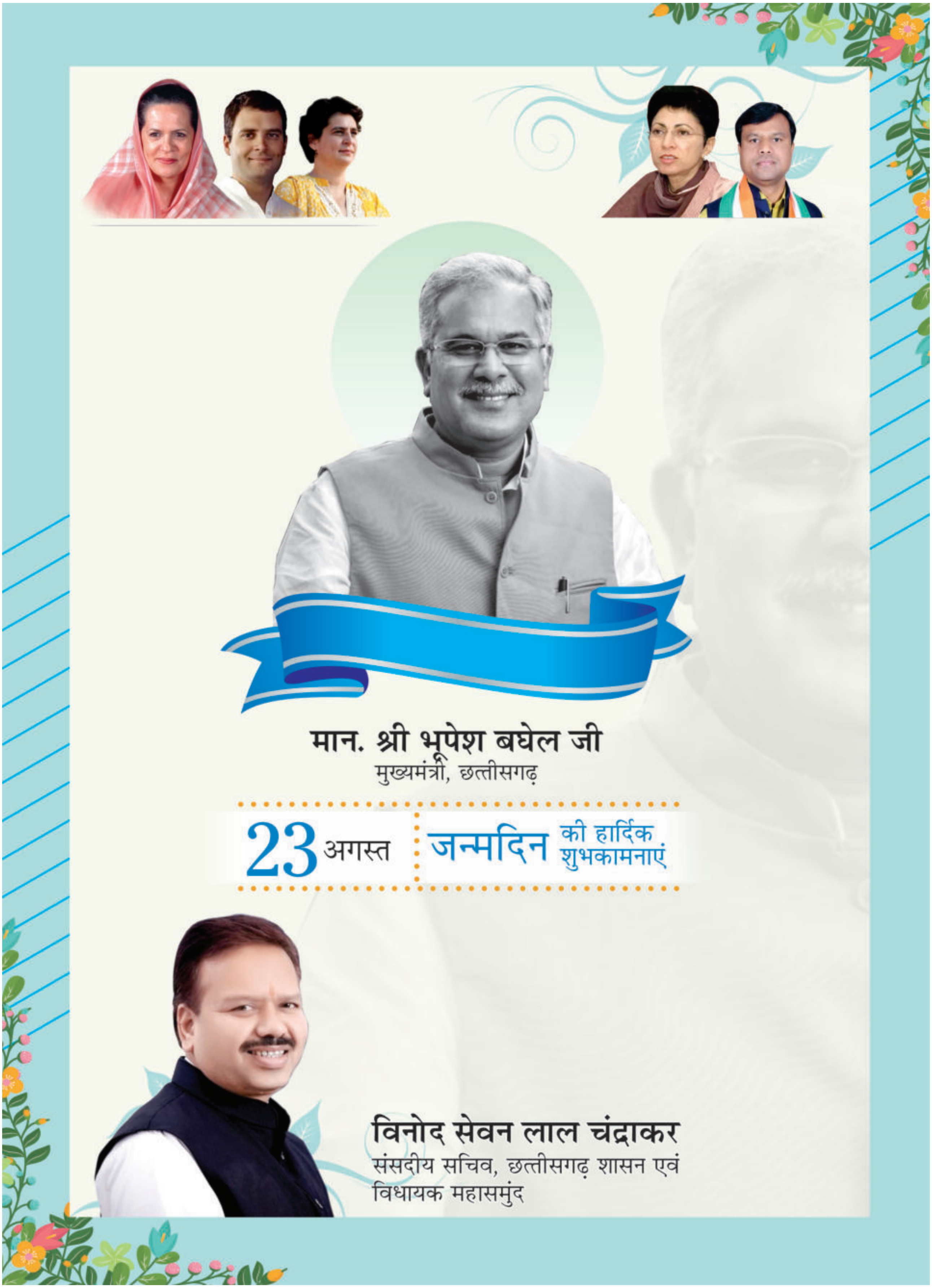
मान. श्री भूपेश बघेल जी
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़
23 अगस्त
जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं
विनोद सेवन लाल चंद्राकर
संसदीय सचिव, छत्तीसगढ़ शासन एवं
विधायक महासमुंद

स्वतंत्रता दिवस पर विशेष

आजादी के 77वें वर्ष में याद करे पंडित नेहरू के योगदान के 17 वर्ष

हम आजादी के 77वें वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं, आज के कालखंड में आजादी के बाद में पैदा हुए लोगों की संख्या बहुतायत है, इसलिए अधिकांश आबादी को न गुलामी का कालखंड मालूम है न आजादी के बाद के शुरूआती दौर की मुश्किलों का ज्ञान है. विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के प्रति अंधी दौड़ के चलते हमारी युवा पीढ़ी और प्रौढ़ पीढ़ी इतिहास के समुचित ज्ञान से दूर है, इसीलिए इतिहास के पन्नों को पलट कर सुधि पाठकों का ध्यान आकर्षित करने आजादी के शुरुआती वर्षों के कालखंड की ओर ले जाना आवश्यक है, जो कालखंड पंडित नेहरू और उनके समकालीन राजनेताओं और विभिन्न विधाओं में निपुण लोगों का कालखंड था, जिन्होंने अपनी सारी क्षमताएँ व योग्यताएँ देश के लिए खपा दी.

» अजय चौहान

भारत के आजादी के 77 वें वर्ष में हम प्रवेश कर चुके हैं. 1947 से लेकर 1964 तक पंडित जवाहर लाल नेहरू देश के प्रथम प्रधानमंत्री रहे यानि कि जब तक जिंदा रहे तब तक. आधुनिक भारत के निर्माता कहे जाने वाले पंडित नेहरू भारत में सभी इंस्टीट्यूशन आरंभ कर दिए थे. यह अपने आप में एक रिकॉर्ड है कि एक से बढ़कर एक बेहतरीन इंस्टीट्यूशंस उन्होंने जो स्थापित किए उसमें इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन, इंडियन

इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, एम्स सब आरंभ हो गए थे. जब भारत आजाद हुआ तो भारत में कॉलेज के नाम पर बहुत कम कॉलेज थे. स्कूल नहीं थे. 99 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने पर मजबूर थे. भारत के लाखों गांव में से किसी भी गांव में बिजली नहीं थी. भारत के कई शहरों में बिजली नहीं थी. भारत की साक्षरता दर 10 प्रतिशत के आसपास थी. भारतीयों की औसत आयु 30 से 35 वर्ष थी. गुलामी से निकले थे. कुछ भी नहीं था. लेकिन इरादे थे बिल्कुल आयरन जैसे. आगे जैसे कुछ करना है, सबसे बड़ी मुसीबत तो ये थी, कि बिना संसाधन के किया जाए तो क्या किया जाए. राज्यों के पास भी कोई पैसा नहीं था. भारत अकाल के दौर से निकला था. कई जगह बिहार व बंगाल क्षेत्रों में भारी बाढ़ भी आई थी. प्राकृतिक विभीषकाएं बहुत थीं. लाखों शरणार्थी जो भारत-पाकिस्तान बटवारे के बाद भारत में आए थे. अभी का बांग्लादेश जो पहले पूर्वी पाकिस्तान कहलाता था वहां से बंगाली भाषी हिंदू शरणार्थी आए थे. उनके पुनर्वास की व्यवस्था मुंह बाएं खड़ी थीं. राजकोष में कुछ था नहीं. कहीं से कोई मदद की उम्मीद भी नहीं थी. ऐसी परिस्थिति में पंडित नेहरू बिल्कुल असहाय से थे.

तब पंडित नेहरू ने संपर्क साधा मौलाना अबुल कलाम आजाद से, जो शिक्षा मंत्री थे. पंडित नेहरू ने उनसे कहा कि कोई अच्छी इंस्टीट्यूट भारत में शुरू करना है, जैसे कि एमआईटी और हार्वर्ड विश्वविद्यालय जो अमेरिका में है, ऐसे विश्वविद्यालय की भारत में जरूरत है और जल्दी ही ऐसी संस्थाएं भारत में स्थापित करना है. फिर उस सिलसिले में मौलाना अबुल कलाम आजाद जो भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री भी थे, अमेरिका गए. वहां कई हफ्ते गुजारे. वहां के कई इंस्टीट्यूट्स में गए. उनकी कार्य प्रणाली का अध्ययन किए तथा प्रबंधन से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी हासिल की. वहां का सेटअप देखे फिर एमआईटी और हार्वर्ड की तर्ज पर 1955-1956 में खड़गपुर में पहली आईआईटी संस्थान खोला गया. यानि कि नेहरू के आने के बाद 9 सालों के भीतर पहली आईआईटी खुल गई. 1960-1961 में पहला इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट अहमदाबाद में खोला गया.

इसी दौरान 1950 के दशक में जब पैसे नहीं थे, राजकुमारी अमृत कौर भारत की हैल्थ मिनिस्टर थीं, तो उन्हें कहीं से पता चला कि स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार के लिए न्यूजीलैंड से कुछ ग्रांट मिल सकता है. उस दौरान न्यूजीलैंड में भारत का दूतावास नहीं था. तब भारत सरकार द्वारा ऑस्ट्रेलिया की सरकार को तार संदेश भेजा गया और निवेदन किया गया कि क्या आप भारत में स्वास्थ्य सेवाओं के लिए न्यूजीलैंड की सरकार से पहल कर आर्थिक मदद का प्रयास कर सकते हैं? तब ऑस्ट्रेलिया सरकार के पहल के माध्यम से न्यूजीलैंड सरकार ने भारत सरकार को स्वास्थ्य सेवाओं में आर्थिक मदद की उक्त धन राशि से देश की राजधानी दिल्ली में प्रथम अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS) की स्थापना पंडित नेहरू द्वारा की गई.

इसी तरह इसरो को प्रारंभ किया गया, फिर विक्रम साराभाई की पहल से भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर प्रारंभ किया गया, भाभा की बदौलत और न जाने कितनी इंस्टीट्यूट्स पंडित नेहरू ने अपने 17 साल के प्रधानमंत्रित्व कार्यकाल में शुरू किए. हम उन्हें उनकी पंचशील नीति की असफलता के कारण 1962 में चीन से मिली हार के लिए उन्हें दोषी मानते हैं. पंडित नेहरू को आज विपक्षी दल की सरकारें रोज कोसती हैं, लेकिन भारत में जितना इंस्टीट्यूशन फ्रेम वर्क है सब उन्हीं का दिया हुआ है. ये लोकतंत्र उन्हीं की देन है, भारत में सेक्युलरिज्म उन्हीं की देन है, भारत के संविधान की प्रस्तावना भी उन्होंने ही तैयार की. इंक्लूसिव ग्रोथ उन्होंने दी, फ्री प्रेस उन्होंने दी. गुट निरपेक्ष देशों के अंतर्राष्ट्रीय संगठन का गठन भी पंडित नेहरू ने ही किया था. उन्होंने लोहे के बड़े-बड़े कारखाने स्थापित किए. जिसमें भिलाई इस्पात संयंत्र, राऊरकेला, बोकारो, दुर्गापुर जैसे स्टील प्लांट शामिल हैं. उन्होंने भाखड़ा नांगल डैम बनाया, भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स बनाया, लाइफ इंश्योरेंस कॉर्पोरेशन बनाई, ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉर्पोरेशन बनायी, इंडियन ऑयल उन्होंने बनाया. भारत की नेशनल लाईब्रेरी उन्होंने बनाई, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन उन्होंने बनाया. आईआईटी, आईआईएम, सारे केंद्रीय विद्यालय उन्होंने बनाए, खादी एवं ग्रामोद्योग कमीशन उन्होंने बनाया. उन्हीं के समय में मोस्ट मॉडर्न सिटी भारत में उदय हुआ जिसका नाम चंडीगढ़ है. आप सोचिए क्या नहीं किया, ग्रीन रिवॉल्यूशन नेहरू लेकर आए. भारत में एक डिजिटल रिवॉल्यूशन आया और लोगों को उनसे जोड़ा गया.

एक से एक बड़े महानुभाव उनके समय पैदा हुए, होमी जहांगीर भाभा, विक्रम साराभाई, पीसी महालोनापिस, वर्गीस क्यूरियन, एसएस भटनागर, बड़े साइंटिस्ट एस भगवंतम, सीडी देशमुख, दरअसल ये अपने आप में एक अनूठी बात थी.

दरअसल भारत में जो पब्लिक सेक्टर की इकाइयां स्थापित हुई जिससे भारत की आर्थिक रूप से मजबूती की शुरुआत हुई इसलिए उन्हें हमेशा द अमेरिकन ऑफ

मॉडर्न इंडियन कहा जाता है. उन्होंने देश की राजनीति में धर्म को कभी बढ़ावा नहीं दिया. वे हमेशा धर्म के सार्वजनिक रूप से प्रदर्शन के खिलाफ थे. वे कहा करते थे, कि देश के विकास में धर्म का कोई स्थान नहीं है. स्थान है तो विज्ञान का. विज्ञान को आगे बढ़ाने वाला कौन था? विज्ञान को आगे लाने वाले पंडित नेहरू ही थे.

इसके अलावा साहित्य अकादमी, ललित कला अकादमी, संगीत अकादमी, प्लानिंग

कमीशन भी उन्हीं की देन है. इलेक्शन कमीशन भी उन्हीं की देन है. आप सोचिए क्या कुछ उन्होंने नहीं दिया सब कुछ तो भारत में बना कर गए और फिर इस हिंदुस्तान में कुछ लोग पूछते हैं कि पंडित नेहरू ने 17 साल में किया क्या? कांग्रेस ने किया क्या 70 साल में? भारत में हुआ क्या? दरअसल शायद कभी ये समझ ही नहीं पाएंगे कि पंडित नेहरू इस देश को क्या दे गए? पंडित नेहरू थे, तो नरेंद्र मोदी जैसे लोगों को मौका मिला. तभी तो वे इस देश के प्रधानमंत्री बन सके. आप सोचिए अगर पंडित नेहरू उस समय नहीं होते जब भारत की कैपिटल इनकम बहुत कम थी तो आज हम जहां हैं वहां नहीं होते. उन्होंने हमें क्या कुछ नहीं दिया. ऑल इंडिया रेडियो का जो प्रचार-प्रसार है, जगह-जगह रेडियो स्टेशन खोलना लोगों को जोड़ना ये पंडित नेहरू ने ही किया था. अल्टीमेटली सबकुछ उनका ही किया हुआ था, इसके अलावा कई साइंटिफिक लैब्स उन्हीं के समय खुला. देखा जाए तो भारत का जितना मॉडर्न सैटअप था वो पंडित नेहरू के द्वारा ही शुरू किया गया था. पंडित नेहरू के जाने के बाद देश के किसी भी प्रधानमंत्री ने इतनी सारी साइंटिफिक इंस्टीट्यूशन, ललित कला एकेडमी या दूसरी सारी इंस्टीट्यूशन शायद किसी और प्रधानमंत्री ने नहीं खोला. 17 सालों के अंदर ही भारत का सारा स्टील फ्रेमवर्क पंडित नेहरू देकर चले गए और हम सब सिर्फ उसके ऊपर डेव्हलप करते रहे. सर्च ऑफ डेवलपमेंट वहीं से आया और तो और टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च भी उन्हीं के समय की देन है. हम उसको कैसे भूल सकते हैं. यह कहने की बातें नहीं है, जो किया है उसे पहचानने की जरूरत है. यह अपने आप में देश का सौभाग्य था, जो कि पंडित नेहरू जैसे प्रधानमंत्री हमें मिले. उसने भारत में लोकतंत्र का और उसके साथ लिबर्टी का सारा सेटअप दिया. वह सारे टॉप के कॉलेजेस दे दिए. मैनेजमेंट दे दिए. उन्होंने हमें सब कुछ दिया जिनकी हमें कल्पना भी नहीं थी. आज हम बैठकर बहुत बार उनको कोसते हैं, लेकिन शायद आज के लोग कभी समझ नहीं पाएंगे कि जब उस समय यह सारी की सारी चीजें इस्टैबलिस्ड की जा रही थी. हमारे पास पैसे नहीं थे जब 1954 में टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल की स्थापना की गई थी, तो कुछ भी नहीं था. हाँ बहुत सारे लोग थे जो साइंटिफिक रिसर्च के अंदर होमी भाभा, सीवी रमन, सतीश धवन सरकार, जैसी गोश्त, आर एस भटनागर, उन्होंने भारत को साइंटिफिक टेंपरामेंट दिया और यह वही कालखंड था जहां से हमारे डॉक्टर अब्दुल कलाम उस समय बहुत यंग थे वहां इसी वजह से डेव्हलप हो रहे थे वह पूरी की पूरी इंस्टीट्यूट थी डेव्हलप हो रही थी उनको वहां पर मौका मिला. एटॉमिक एनर्जी कमीशन वह भी उन्हीं के समय में आया, इंडियन स्पेस रिसर्च आर्गेनाईजेशन वह भी उन्हीं के समय में आया. हिंदुस्तान एंटीबायोटिक्स पिंपरी पुणे में स्थापित किया, जहां दवाइयां बनती थी वह भी उन्हीं के समय में आया. भारत को वह सब एडवांस साइंटिफिक रिसर्च इंस्टीट्यूट उन्हीं की देन है. यह भारत का सौभाग्य ही था कि उन्हें भारत में पंडित नेहरू जैसा विजनरी प्रधानमंत्री मिला. उन्होंने साइंस के विभिन्न विषयों जैसे भौतिकी, रसायन, जीव विज्ञान इन पर अलग-अलग इंस्टीट्यूट तैयार किए. जिसके कारण भारत आगे चलकर विज्ञान के क्षेत्र में तरक्की कर पाया. जो तरह-तरह के विश्वविद्यालय आते हैं, इंजीनियरिंग एजुकेशन आती है उसमें बहुत सारा योगदान डॉक्टर राधाकृष्णन का भी खास तौर पर योगदान था. संगीत के क्षेत्र में नाटक एकेडमी भारतीय नाट्य संघ उनके कालखंड में स्थापित हुआ. जो यूनेस्को की मदद से साहित्य एकेडमी, ललित कला एकेडमी यह सारे ही एकेडमी तो उन्हीं की देन है. इसके अलावा भारत का जो फिल्म संसार है, फिल्म का जो तेजी से विकास हो रहा था वह उन्हीं के कालखंड में हो रहा था. तो कहीं ना कहीं 17 वर्षों के कालखंड में हुआ. इस प्रकार हम दावे के साथ कह सकते हैं कि 17 वर्षों में जो उन्होंने अनूठा कार्य किया शायद वह भारत का कोई दूसरा प्रधानमंत्री आज तक नहीं कर पाया. क्योंकि उनके पास एक बड़ा विजन था. पंडित नेहरू का कोई क्रिएट ही तो नहीं कर पाया. जरा हम कल्पना करें गुलामी से बाहर निकला हुआ देश जिसका राजकोष बिल्कुल खाली हो, जिस देश के 99 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने पर मजबूर हो, देश में साक्षरता की दर लगभग 10 प्रतिशत हो और जिस देश की जनता की औसत आयु 30–35 वर्ष के बीच हो वह देश इतने सारे इंस्टीट्यूशंस को कैसे खड़ा कर सकता है. आधुनिक भारत की आधारशिला कैसे इतनी तेजी से रख सकता है? इससे पंडित जवाहरलाल नेहरू के विजनरी मस्तिष्क का ही कमाल था. आर्थिक स्थिति की सही जानकारी के लिए उक्त 17 वर्ष के कालखंड का वार्षिक बजट का आंकड़ा प्रस्तुत है:–

1947 में 178 करोड़, 1948 में 256 करोड़, 1949 में 307 करोड़, 1950 में 322 करोड़, 1951 में 375 करोड़, 1952 में 406 करोड़, 1953 में 453 करोड़, 1954 में 451 करोड़, 1955 में 498 करोड़, 1956 में 543 करोड़, 1957 में 636 करोड़, 1958 में 763 करोड़, 1959 में 757 करोड़, 1961 में 962 करोड़, 1962 में 1023 करोड़, 1963 में 1585 करोड़ रुपए मात्र था. आधुनिक भारत के शिल्पी व स्वप्न द्रष्टा पंडित जवाहरलाल नेहरू के योगदान के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त करते हुए आप सबको स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं व बधाई !! जय हिन्द!!

(लेखक समाजसेवी है.)

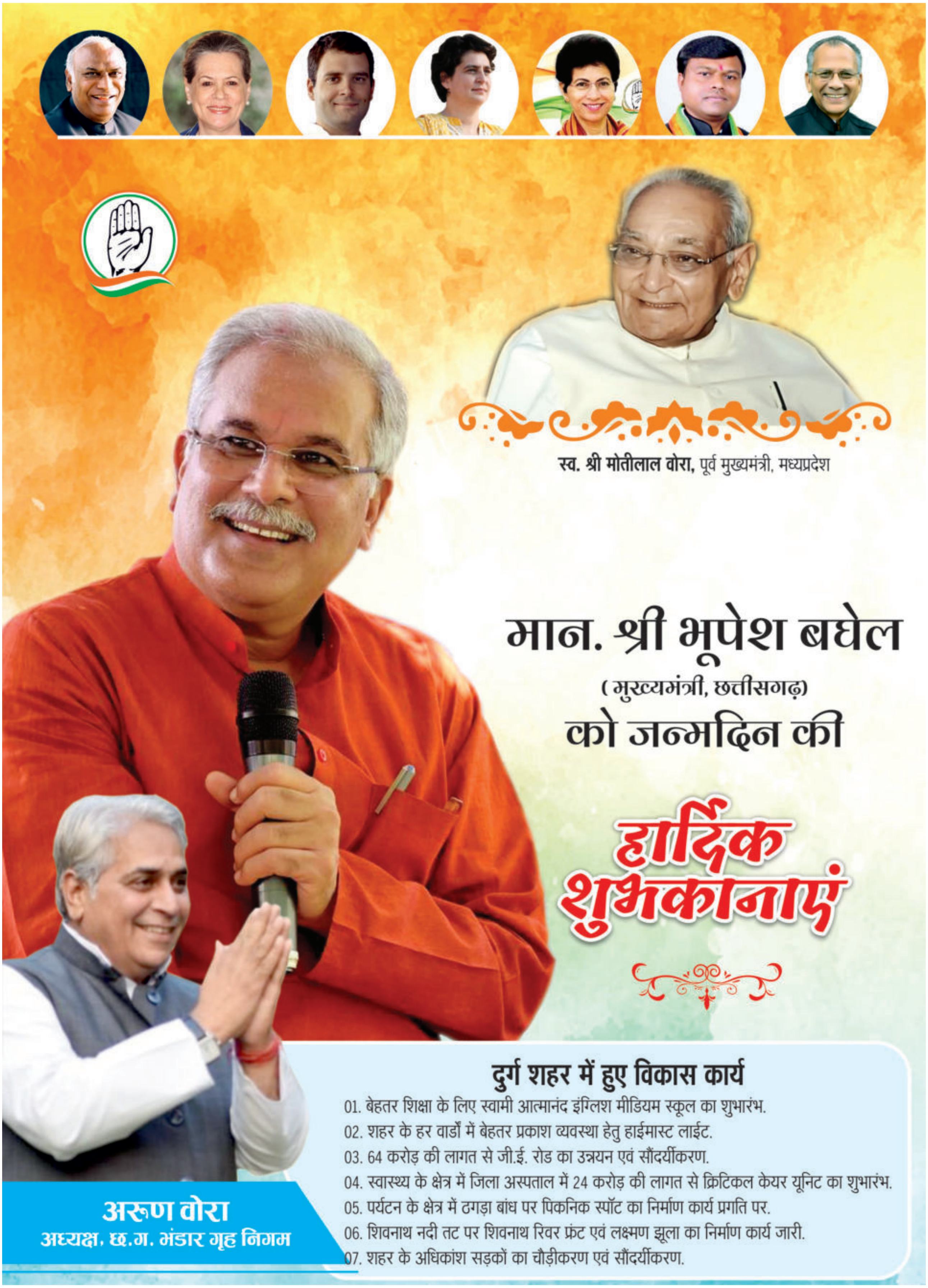
स्व. श्री मोतीलाल वोरा, पूर्व मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश
मान. श्री भूपेश बघेल
(मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़)
को जन्मदिन की
हार्दिक शुभकामनाएं
दुर्ग शहर में हुए विकास कार्य
01. बेहतर शिक्षा के लिए स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल का शुभारंभ.
02. शहर के हर वार्डों में बेहतर प्रकाश व्यवस्था हेतु हाईमास्ट लाईट.
03. 64 करोड़ की लागत से जी.ई. रोड का उन्नयन एवं सौंदर्यीकरण.
04. स्वास्थ्य के क्षेत्र में जिला अस्पताल में 24 करोड़ की लागत से क्रिटिकल केयर यूनिट का शुभारंभ.
05. पर्यटन के क्षेत्र में ठगड़ा बांध पर पिकनिक स्पॉट का निर्माण कार्य प्रगति पर.
06. शिवनाथ नदी तट पर शिवनाथ रिवर फ्रंट एवं लक्ष्मण झूला का निर्माण कार्य जारी.
07. शहर के अधिकांश सड़कों का चौड़ीकरण एवं सौंदर्यीकरण.
अरूण वोरा
अध्यक्ष, छ.ग. भंडार गृह निगम

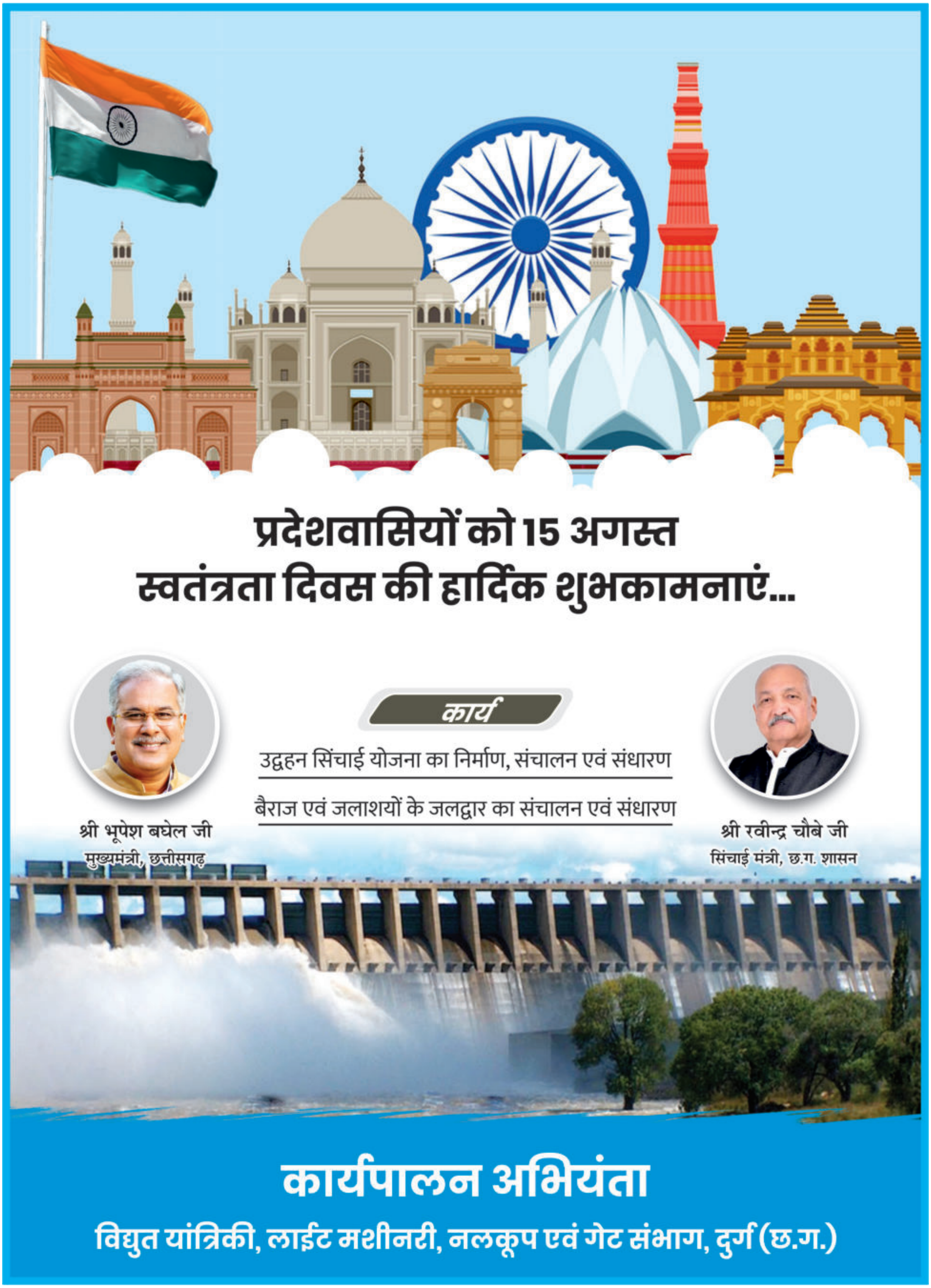

प्रदेशवासियों को 15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं...
कार्य
उद्वहन सिंचाई योजना का निर्माण, संचालन एवं संधारण
बैराज एवं जलाशयों के जलद्वार का संचालन एवं संधारण
श्री भूपेश बघेल जी
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़
श्री रवीन्द्र चौबे जी
सिंचाई मंत्री, छ.ग. शासन
कार्यपालन अभियंता
विद्युत यांत्रिकी, लाईट मशीनरी, नलकूप एवं गेट संभाग, दुर्ग (छ.ग.)

23
August
भगवान से हमारी प्रार्थना है कि आपके कुशल नेतृत्व से
क्षेत्र निरंतर नई ऊंचाइयां प्राप्त करें और आगे बढ़ें...
Happy Birthday Bhupesh Bhai
हरेन्द्र राय
सुरेन्द्र राय
राम कुमार राय
मनोज कुमार राय
ऑथराइज ट्रांसपोर्ट कांट्रेक्टर
छ.ग. स्टेट सिविल सप्लाइज कॉर्पोरेशन लि. रायपुर (छ.ग.)
छ.ग. राज्य सहकारी विपणन संघ मर्यादित रायपुर (छ.ग.)
जिला सह. के. बैंक मर्यादित दुर्ग (छ.ग.)
स्टील ऑथारिटी ऑफ इंडिया लि. भिलाई
मनोज रोड लाइन्स
सुरेन्द्र रोड लाइन्स
प्लाट नं. : 38/10, ट्रांसपोर्ट नगर, हथखोज, भिलाई

पर्यटन स्थल

- यहां था देश का दूसरा सबसे बड़ा विश्वविद्यालय
- बड़ी संख्या में आते थे विदेशी विद्यार्थी भी
- सड़क और जल मार्ग से होता था व्यापार
- देश का चौथा बड़ा विश्वविद्यालय भी छत्तीसगढ़ में

भारत के स्वर्ण युग का साक्षी सिरपुर

आज हम बात करने जा रहे हैं भारत की उस प्राचीन धरोहर की जहां न केवल तत्कालीन भारत का दूसरा सबसे बड़ा विश्वविद्यालय था बल्कि जहां व्यापार एवं परिवहन सेवाएं भी विकसित रूप में विद्यमान थीं. इस महानगर का नाम था श्रीपुर (अब सिरपुर). 11वीं शताब्दी के भूकम्प और इसके बाद 13वीं शताब्दी में आई भीषण बाढ़ ने इस महानगर को जमींदोज़ कर दिया. 1999 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने यहां धरती में समा गई एक पूरी सभ्यता का पता लगाना शुरू किया और लाल ईंटों से बने लक्ष्मण मंदिर का पता लगाया. अब तक हुई खुदाई में इस धरोहर का केवल 20 प्रतिशत भाग ही अनावृत हुआ है. अफसोस की विश्व धरोहर की श्रेणी की यह पुरा सम्पदा अब तक राज्य संरक्षित धरोहर की श्रेणी में शामिल नहीं हो पाई है. उलटे सिरपुर महोत्सव जैसे आयोजनों के चलते यहां जहां तहां अवैध कब्जे हो चुके हैं जो इसके यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में शामिल होने की राह में सबसे बड़ी बाधाएं हैं.

» मनोज शंकर

धरती पर अनेक सभ्यताओं का विकास हुआ है. अनेक धर्म और जातियों, अनेक संस्कृतियों ने जन्म लिया है. युद्ध और शांति के कई दौर सृष्टि ने देखे हैं. भारतीय महाद्वीप के अनेक राष्ट्र कभी मौर्यकालीन भारत का हिस्सा हुआ करते थे. इनमें अफगानिस्तान, म्यांमार,

पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान और श्रीलंका प्रमुख हैं. ईसापूर्व छठी शताब्दी से सातवीं शताब्दी के मध्य भारत सबसे अधिक समृद्ध हुआ करता था. अनेक विदेशी विद्यार्थी अध्ययन के लिए भारत आते थे. चीनी यात्री फाह्यान और व्हेनसांग प्रमुख इनमें प्रमुख थे जिन्होंने यहां की कई बातों का उल्लेख अपने ग्रंथों में किया है.

विश्व के चार प्रसिद्ध विश्वविद्यालय- नालंदा, सिरपुर, तक्षशिला और विक्रमशिला भारत में ही थी. विभाजन के बाद तक्षशिला पाकिस्तान में चला गया. नालंदा भारत आज भी बिहार राज्य में खड़ा है. देश का दूसरा सबसे बड़ा विश्वविद्यालय श्रीपुर में था. 11 वीं शताब्दी के भयंकर भूकंप और तेरहवी शताब्दी में महानदी में आई विनाशकारी बाढ़ में तत्कालीन दक्षिण कौशल (वर्तमान छत्तीसगढ़) राज्य की राजधानी रहा श्रीपुर (वर्तमान सिरपुर) जमींदोज हो गया. विद्यार्थियों की संख्या के हिसाब से श्रीपुर देश का दूसरा सबसे बड़ा विश्वविद्यालय हुआ करता था. यहां कम से कम 10 हजार विद्यार्थी अध्ययन करते थे. भारत के अन्य 40 विश्व विरासतों की तुलना करें तो पाएंगे कि सिरपुर उनमें सबसे श्रेष्ठ है. दुनिया में कहीं भी इतनी विकसित सभ्यता और संस्कृति संपन्न नगर छठवीं शताब्दी में नहीं था, जहां भू और जल मार्ग से व्यापार की गतिविधियाँ संचालित थी और नालंदा के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा विश्विद्यालय भी यहीं था जिसमें विदेशों से भी विद्यार्थी आते थे. इतिहासकारों का मानना है कि देश का चौथा विश्वविद्यालय भी छत्तीसगढ़ के केशकाल की पहाड़ियों में था. नारायणपाल का विष्णु मंदिर प्रमाण है तत्कालीन वास्तुकला और सांस्कृतिक विरासत का. पुरातत्व विभाग को इस क्षेत्र में गहन सर्वेक्षण करना चाहिए.

25 साल पहले शुरू हुआ सर्वेक्षण

राज्य पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग और संस्कृति विभाग ने 1999 से 2004 तथा 2007 से 2011 तक सिरपुर की खोई वैभव का पता लगाने के प्रयास शुरू किये. खुदाई कार्य आरंभ होने के बाद कहीं जाकर दुनिया को पता चला कि महानदी के तट पर लगभग 8 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में एक राजधानी नगर है. यहां 12 से ज्यादा विहार (विद्यालय), लक्ष्मण मंदिर, गधेश्वर महादेव मंदिर, जैन मंदिर और अनेक भग्न मंदिर, मूर्तियाँ, स्तूप, हाट बाजार, नदी परिवहन तट और विरासतें प्राप्त हो चुकी हैं. यहां जमींदोज़ विरासत का यह केवल 20 फीसद हिस्सा है. धरती के गर्भ में समाए शेष स्थलों पर से परदा उठना अभी बाकी है. वर्तमान में लक्ष्मण मंदिर सहित 34 विरासतों का संरक्षण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा और दो विरासतों का संरक्षण राज्य पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग द्वारा किया जा रहा है.

2014 में शुरू हुई विकास की पहल

छत्तीसगढ़ के गठन के बाद 2014 में पहली बार सरकार ने महसूस किया कि इस स्थान को निवेश क्षेत्र के रूप में विकसित किया जाना चाहिए. लंबी प्रशासनिक कवायद के बाद 2015 में आसपास के 34 गाँवों को मिलाकर इसे सिरपुर विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण घोषित कर दिया गया. 2017 में इसकी सीमा तय कर अधिसूचना जारी कर दी गई. अब पहली बार सरकार ने साडा अध्यक्ष के रूप में एक अशासकीय अध्यक्ष की नियुक्ति की है. जिला कलेक्टर को उपाध्यक्ष बनाते हुए अन्य नौ जिला स्तरीय अधिकारियों को विशेष प्राधिकार समिति का हिस्सा बनाया है. स्वीकृत सेटअप पर नियुक्तियों भी प्रारंभ कर दी गई हैं.

लाल ईंटों से बना प्राचीनतम मंदिर

1999-2004 की खुदाई में यहां लाल ईंटो से बना इकलौता और अद्भुत कारीगरी का नमूना लक्ष्मण मंदिर सामने आया था. यह एक मात्र संरचना है जो साबुत है. इसका थोड़ा बहुत प्रचार करने के अलावा राज्य के पर्यटन विभाग ने यहां एक रिसार्ट की स्थापना है. इसके साथ ही पर्यटक सूचना केन्द्र का भवन और होर्डिंग्स लगाए गए हैं. पर आधुनिक तकनीकों से यहां मौजूद संरचनाओं को जाँचने परखने की कोई ईमानदार कोशिश नहीं की गई.

राज्य विरासत घोषित करने का फैसला

"सिरपुर" एक विश्व विरासत है और भारत के महत्वपूर्ण विरासतों में से एक है. इसको यह दर्जा दिलाने के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने कम से कम तीन बार प्रयास किया है. लेकिन समन्वय की कमी और राज्य तथा केन्द्र सरकारों की अरुचि के कारण यह आज भी उपेक्षा का शिकार है. विश्व विरासत में शामिल होने की पहली शर्त यही है कि धरोहर स्थल राज्य विरासत स्थलों में शामिल हो. अब तक सिरपुर को न तो देश के बौद्ध सर्किट में शामिल किया गया है न ही केन्द्र और राज्य के पर्यटन केन्द्र के रूप में इसे प्रचार प्रसार ही मिला है. अब जाकर भूपेश सरकार ने एक मास्टर प्लान तैयार करने की दिशा में मजबूत कदम उठाये हैं. कोशिशें जारी हैं कि सिरपुर क्षेत्र को विरासत के नक्शे में लाया जा सके. साथ ही राज्य सरकार ने इसे राज्य विरासत का दर्जा देने का फैसला भी कर लिया है.

Chhattisgarh
full of surprises
Chhattisgarh Tourism Board

छत्तीसग

राम वन गमन प

आइये चलें
आराध्य सियाराम के पदचिन्हों पर

प्रभु राम क
माता कौ
भूमि
आपका स

2260 किमी
हर एक कदम
आस्था और विश्वास का

10 पड़ाव
पौराणिक कथाओं की
जीवंतता के केंद्र

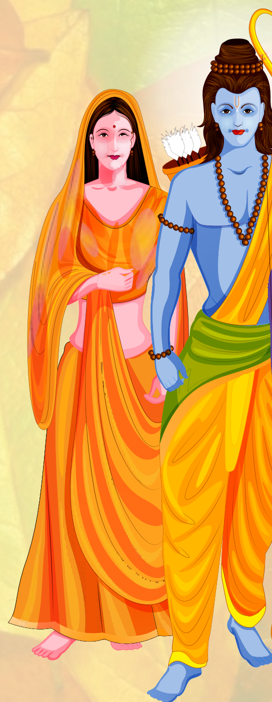

चित्रकोट जलप्रपात

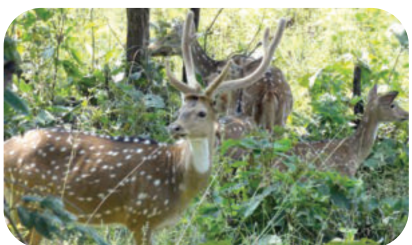
बारनवापारा वन्यजीव

मैनपाट का परिदृश्य

ढ़ पर्यटन

पर्यटन परिपथ

ा ननिहाल
शल्या की
न में
स्वागत है

बुकिंग हेतु कॉल करें टोल फ्री नं.: **1800 102 6415**
वेबसाईट : www.chhattisgarhtourism.in
फॉलो करें : #GoChhattisgarh

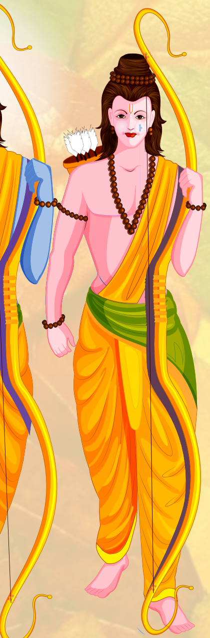

कबीरधाम भोरमदेव

दंतेश्वरी देवी

घटारानी

छत्तीसगढ़ बना आदिवासियों का स्वर्ग

- वापस मिली उद्योगों के नाम पर अधिग्रहीत जमीन
- वन अधिकार पट्टा देने में सबसे आगे रहा राज्य
- 65 वनोपजों की खरीदी करने वाला एकमात्र राज्य
- तीज त्यौहारों के लिए मिल रही है मदद
- विश्व आदिवासी नृत्य महोत्सव से मिली पहचान
- आर्थिक-सामाजिक स्थिति हुई पहले से बेहतर

छत्तीसगढ़ियावाद का नारा देने वाली भूपेश सरकार को भले ही लोगों ने पहले हल्के में लिया हो पर अब उसकी उपलब्धियों की चर्चा न केवल देश में बल्कि विदेशों में भी हो रही है. राष्ट्रीय आदिवासी नृत्य महोत्सव का आयोजन कर विश्व पटल पर छा जाने वाला छत्तीसगढ़ अब वो छत्तीसगढ़ नहीं रहा जो पांच साल पहले था. भूपेश बघेल नीत सरकार ने साढ़े चार साल में ही राज्य का वह कायाकल्प किया है कि आदिवासी समाज भी आज मुख्यधारा में शामिल हो गया है. न केवल इस समाज की मुश्किलें कम हुई हैं बल्कि उसकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति भी बेहतर हुई है.

» पी. मोहन

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने सत्ता संभालते ही सबसे पहले उद्योगों के नाम पर आदिवासियों से छीनी गई जमीनों को उन्हें लौटाने का काम किया. इसके साथ जबरिया मामलों में जेल काट रहे आदिवासियों के खिलाफ चल रहे प्रकरणों को खत्म करवाकर उन्हें आजादी की सांसें लौटा दी. इसके साथ ही 65 प्रकार के वनोपजों की खरीदी प्रारंभ कर उनके आय के स्रोतों में लगभग 900 प्रतिशत का इजाफा कर दिया गया. सरकार यहीं नहीं रुकी बल्कि आदिवासी देवस्थल पर पूजा करने वाले पुजारी, बैगा, गुनिया, माझी, हाट पहरिया, राजा मोहरिया, आदि को भी कृषि मजदूर योजना का लाभ दिया. यही नहीं विभिन्न पर्वों को मनाने के लिए मुख्यमंत्री परब निधि के तहत आर्थिक अनुदान देने की शुरुआत की. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति वर्ग के लिए पृथक विभाग का गठन भी छत्तीसगढ़ में किया गया है. विभाग के अलावा अनुसूचित जाति सलाहकार परिषद का गठन किया गया है जिसमें आदिवासी कल्याण से संबंधित बड़े फैसले लिये जा सकें.

जमीन और वन अधिकार

बस्तर और सरगुजा के वनांचल खनिज संपदा के लिए भी जाने जाते हैं. इन क्षेत्रों में उद्योगों के नाम पर पिछली सरकारों ने सैकड़ों हेक्टेयर जमीनों का अधिग्रहण किया था. भूपेश सरकार ने आते ही बस्तर क्षेत्र में उद्योग की स्थापना के लिए अधिग्रहीत की गई आदिवासियों की जमीन उन्हें वापस लौटा दी. इसके साथ ही छत्तीसगढ़ सामुदायिक और व्यक्तिगत वन अधिकार पत्रों के वितरण के मामले में देश का अग्रणी राज्य बन गया. राज्य में 5 लाख 6 हजार 973 व्यक्तिगत और सामुदायिक वन अधिकार पत्रों का वितरण किया गया है, जिसका कुल रकबा 101 लाख 21 हजार 621 एकड़ है.

छत्तीसगढ़ में आदिवासी समाज का समृद्ध इतिहास रहा है. यहां 42 अधिसूचित जनजातियां और उनके उप समूह रहते हैं. प्रदेश की सबसे अधिक जनसंख्या वाली जनजाति गोंड़. उत्तरी अंचल में जहां उरांव, कंवर, पंडो जनजातियों का निवास है तो वहीं दक्षिण बस्तर अंचल में माडिया, मुरिया, धुरवा, हल्बा, अबुझमाडिया, दोरला जैसी जनजातियों की बहुलता है. इनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत रही है, जो उनके दैनिक जीवन तीज-त्यौहार एवं धार्मिक रीति-रिवाज और परंपराओं के माध्यम से अभिव्यक्त होती है. छत्तीसगढ़ में पहला आदिवासी आंदोलन हल्बा विद्रोह 1774 ई में हुआ था. भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की शुरुआत 1857 से मानी जाती है लेकिन बस्तर में 1825 ई. में नारायणपुर तहसील के परलकोट के जमींदार गेंद सिंह ने अंग्रेजों और मराठों के खिलाफ विद्रोह किया था. त्रेता युग से लेकर अब तक यहां की आदिवासी सभ्यता और संस्कृति अक्षुण्य रही है. भूपेश सरकार ने उन्हें उनका खोया हुआ सम्मान लौटाने की दिशा में ठोस प्रयास शुरू किये हैं.

वनोपज संग्रह को मिला सम्मान

वनोपजों के संग्रहण के जरिए अपनी आजीविका चलाने वाले आदिवासी समुदाय के लिए सरकार ने वनोपज संग्रहण का दायरा बढ़ाया. अब यहां 6 की जगह 65 प्रकार के वनोपजों का संग्रहण और समर्थन मूल्य पर शासकीय खरीदी होती है. इस तरह अब छत्तीसगढ़ देश में सर्वाधिक वनोपज संग्रहण करने वाला राज्य बन गया है. लघु वनोपज प्रसंस्करण से जुड़े महिला स्व सहयता समूहों की संख्या 4239 से बढ़कर 17,424 हो गई है. राज्य में 3945 ग्राम स्तरीय संग्रहण केन्द्र क्रियाशील हैं. 837 संग्रहण केन्द्रों की जिम्मेदारी महिला समूहों को दी गई है. लघु वनोपज संग्रहण का दायरा बढ़ाने के बाद अब छत्तीसगढ़ देश में सर्वाधिक 74 प्रतिशत लघु वनोपज संग्रह करने वाला राज्य बन गया है. वर्ष 2018-19 से वर्ष 2022-23 के बीच राज्य में 30.53 लाख क्विंटल लघु वनोपज की खरीदी की गई है, जिसका मूल्य 356.44 करोड़ रुपए है.

लौटाई जमीन, बढ़ाया कृषि रकबा

बस्तर संभाग के लोहंडीगुड़ा के किसानों से पूर्ववर्ती सरकार ने उद्योग स्थापना के लिए जमीन अधिग्रहित की थी. आदिवासी समाज इसका लगातार विरोध कर रहा था. भूपेश सरकार ने आदिवासियों को उनकी भूमि वापस दिलाई. 1707 आदिवासी किसानों को उनकी 4200 एकड़ अधिगृहित भूमि लौटाई गई है. इसके साथ ही बस्तर संभाग के जिलों में नारंगी वन क्षेत्र में से 30,439 हेक्टेयर भूमि राजस्व मद में वापस दर्ज की गई है. इससे यहां के निवासियों को कृषि व्यवसाय हेतु पट्टे दिए जा सकेंगे. नए उद्योगों की स्थापना की जा सकेगी.

नक्सल प्रभावित बच्चों की शिक्षा

आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र सरगुजा और बस्तर में बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिलाने के लिए करीब 400 स्वामी आत्मानंद

उत्कृष्ट विद्यालयों की स्थापना की गई है. विशेष संरक्षित जनजातीय समुदाय के युवाओं को सरकारी नौकरियों में सीधी नियुक्ति दी गई है. छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में सरकार ने पिछले साढ़े 4 सालों के दौरान आदिवासी हित में कई बड़े फैसले लिए हैं. सरकार के इन प्रयासों से आदिवासियों के लिए आर्थिक खुशहाली का रास्ता खुला है.

निर्दोष आदिवासियों की हुई जेल से रिहाई

भूपेश सरकार ने विभिन्न प्रकरणों में जेल में निरुद्ध किये गये निर्दोष आदिवासियों के खिलाफ लंबित मामलों को खत्म करवाया. इससे उन सैकड़ों आदिवासियों को आजादी की सांद का अधिकार मिला. अब तक 718 प्रकरण विभिन्न न्यायालयों द्वारा वापस किए गए हैं. 944 निर्दोष आदिवासी इस फैसले से लाभान्वित हुए हैं.

जनजातीय के युवाओं को शासकीय नौकरी

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की पहल पर प्रदेश में अब तक विशेष पिछड़ी जनजाति के 811 युवाओं को शासकीय नौकरी दी जा चुकी है. इनमें अबूझमाड़िया, कमार, पहाड़ी कोरवा, बिरहोर और बैगा समुदाय के युवा शामिल हैं.

तेंदूपत्ता संग्राहक सामाजिक सुरक्षा योजना

राज्य लघु वनोपज सहकारी संघ के समन्वय से शहीद महेन्द्र कर्मा तेंदूपत्ता संग्राहक सामाजिक सुरक्षा योजना प्रारंभ की गई है. तेंदूपत्ता संग्राहक परिवार के मुखिया की आकस्मिक मृत्यु, दुर्घटनाजनित मृत्यु, पूर्ण विकलांगता तथा आंशिक विकलांगता की स्थिति में अनुदान सहायता उपलब्ध कराने का प्रावधान किया गया है. अब तक 6150 प्रकरण में 92.89 करोड़ का भुगतान किया गया है.

- तेन्दूपत्ता संग्राहकों की आय बढ़ाने के लिए तेंदूपत्ता संग्रहण की राशि 2500 रुपए से बढ़ाकर 4000 रुपए प्रति मानक बोरा किया गया है.
- साढ़े चार वर्षों में तेंदूपत्ता संग्राहकों को 2518.25 करोड़ रुपए पारिश्रमिक एवं 339.22 करोड़ रुपए प्रोत्साहन पारश्रमिक का भुगतान किया गया है.

लघु वनोपजों का वैल्यू एडिशन

» गोठानों के साथ-साथ 139 वन-धन विकास केन्द्र के माध्यम से प्रसंस्करण

» 36 नए वन धन विकास केन्द्र स्थापित किया जाना प्रस्तावित

» 134 हर्बल उत्पादों का छत्तीसगढ़ हर्बल ब्रांड के नाम से विक्रय

» वर्तमान में 6 मार्ट तथा 30 संजीवनी केन्द्र स्थापित

व्यक्तिगत वन अधिकार पत्र	:	4,57,145
सामुदायिक वन अधिकार	:	45,965
रकबा (एकड़ में)	:	50,05,168
सामुदायिक वन संसाधन अधिकार	:	3863
रकबा (एकड़ में)	:	41,97,130

मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ पर्व सम्मान निधि

समाज के समग्र विकास के लिए जरूरी है कि सरकार लोगों के आर्थिक विकास के साथ ही सांस्कृतिक धरोहरों को भी सहेजने और आगे बढ़ाने का काम करे. मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ी तीज-त्यौहारों के आयोजन में सरकार की भागीदारी के लिए दो महत्वपूर्ण योजनाएं मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ पर्व सम्मान निधि एवं मुख्यमंत्री आदिवासी परब सम्मान निधि शुरू की गई है.

» छत्तीसगढ़ पर्व सम्मान निधि के अन्तर्गत गैर अनुसूचित क्षेत्रों की 6111 ग्राम पंचायतों में तीज त्यौहार मनाने के लिए 10,000 रुपए दो किस्तों में दिए जा रहे हैं.

» मुख्यमंत्री आदिवासी परब सम्मान निधि के अन्तर्गत जनजातीय क्षेत्रों में पारम्परिक आयोजनों के लिए 1840 ग्राम पंचायतों में 10,000 रुपए दो किस्तों में दिए जा रहे हैं.

» पुजारी, बैगा, गुनिया को आर्थिक सहायता राजीव गांधी ग्रामीण भूमिहीन कृषि मजदूर न्याय योजना के अंतर्गत वर्ष 2023-24 से अनुसूचित क्षेत्रों के आदिवासियों के देवस्थल पर पूजा करने वाले पुजारी, बैगा, गुनिया, माझी, हाट पहरिया, राजा मोहरिया, आदि, जिनके पास कृषि भूमि है, उन्हें भी योजना के तहत सात हजार रुपए की आर्थिक सहायता दी जा रही है.

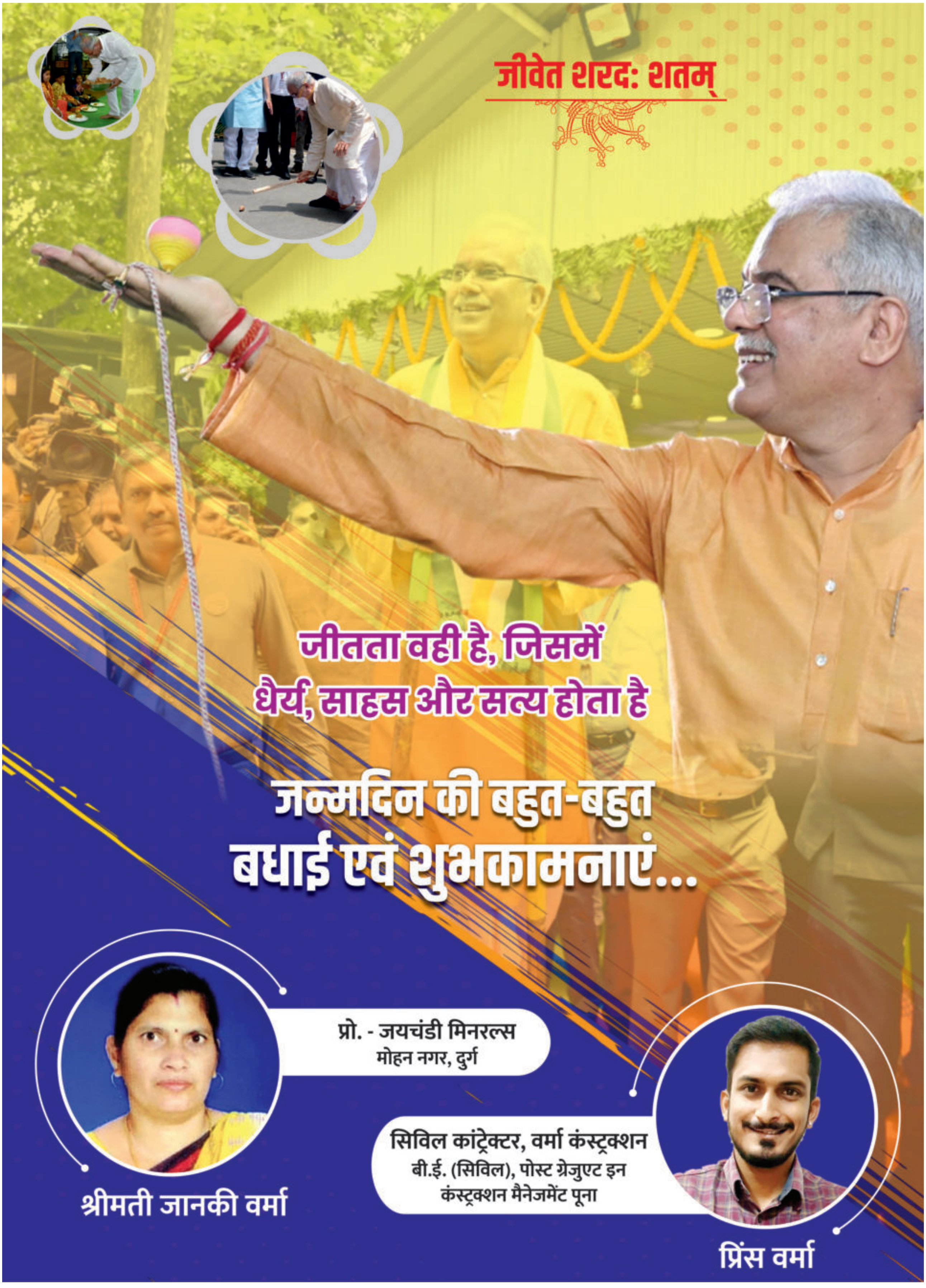
जीवेत शरद: शतम्
जीतता वही है, जिसमें
धैर्य, साहस और सत्य होता है
जन्मदिन की बहुत-बहुत
बधाई एवं शुभकामनाएं...
प्रो. - जयचंडी मिनरल्स
मोहन नगर, दुर्ग
श्रीमती जानकी वर्मा
सिविल कांट्रेक्टर, वर्मा कंस्ट्रक्शन
बी.ई. (सिविल), पोस्ट ग्रेजुएट इन
कंस्ट्रक्शन मैनेजमेंट पूना
प्रिंस वर्मा

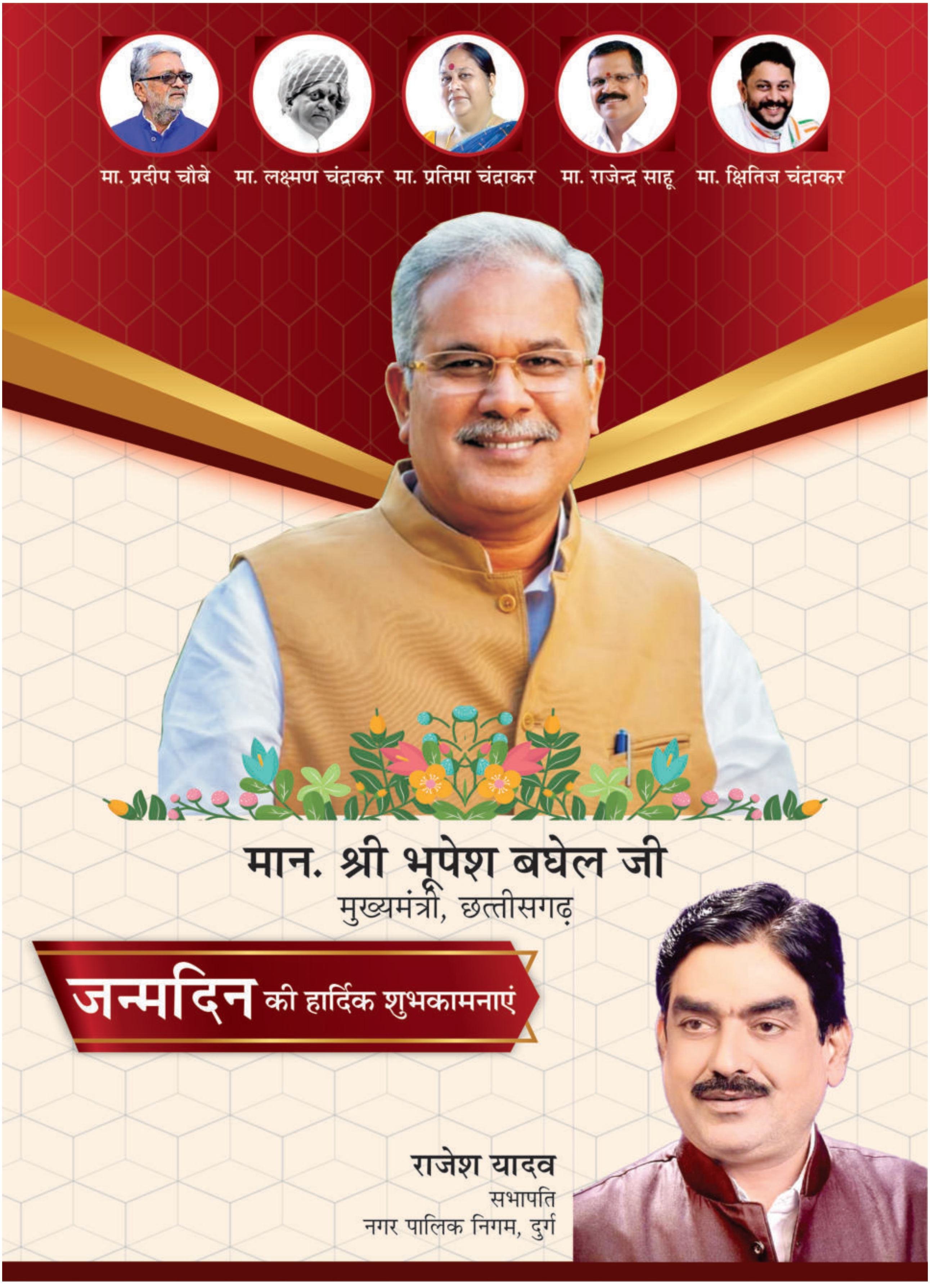
मा. प्रदीप चौबे
मा. लक्ष्मण चंद्राकर
मा. प्रतिमा चंद्राकर
मा. राजेन्द्र साहू
मा. क्षितिज चंद्राकर
मान. श्री भूपेश बघेल जी
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़
जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं
राजेश यादव
सभापति
नगर पालिक निगम, दुर्ग

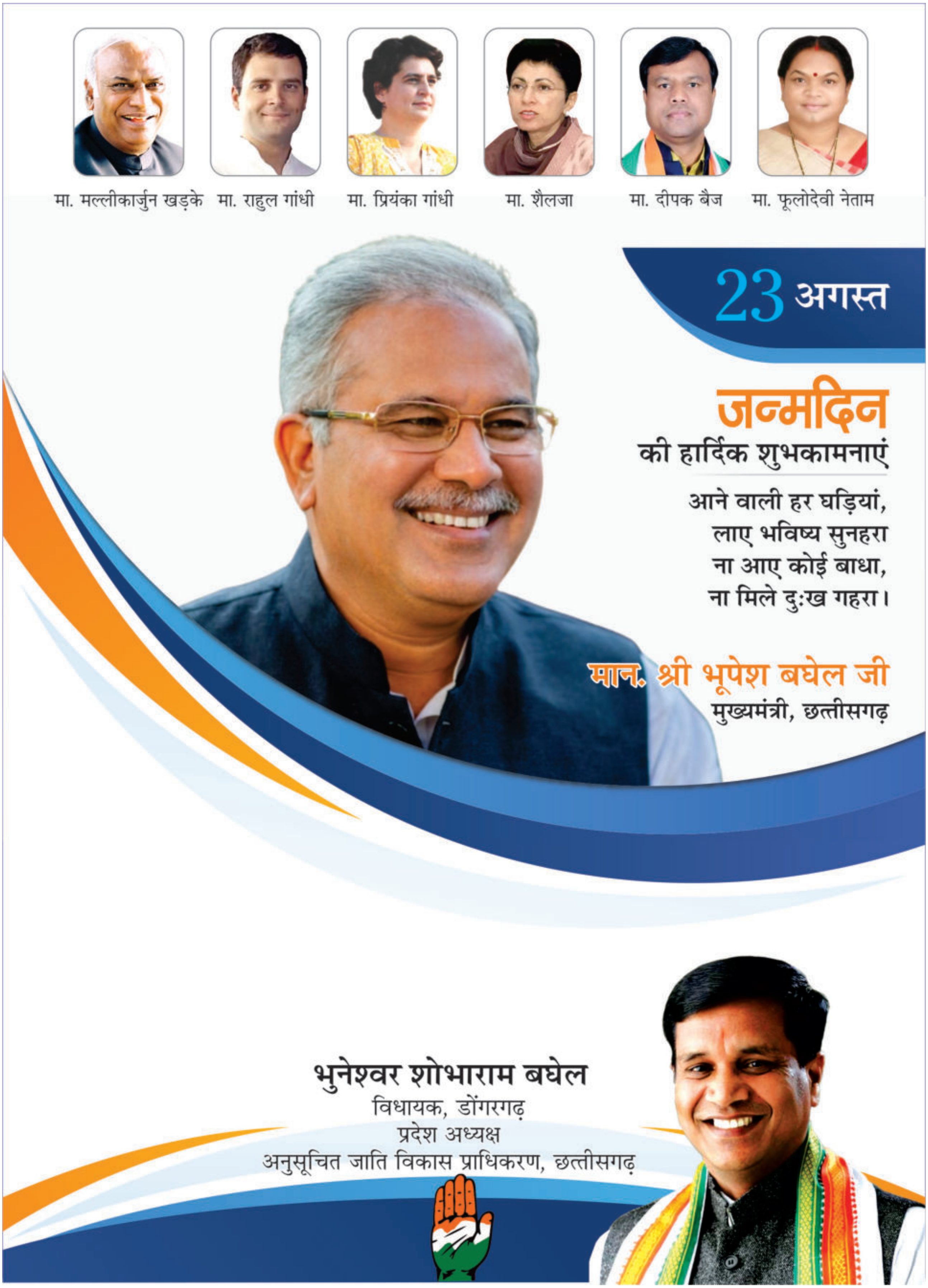
मा. मल्लीकार्जुन खड़के
मा. राहुल गांधी
मा. प्रियंका गांधी
मा. शैलजा
मा. दीपक बैज
मा. फूलोदेवी नेताम
23 अगस्त
जन्मदिन
की हार्दिक शुभकामनाएं
आने वाली हर घड़ियां,
लाए भविष्य सुनहरा
ना आए कोई बाधा,
ना मिले दु:ख गहरा।
मान. श्री भूपेश बघेल जी
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़
भुनेश्वर शोभाराम बघेल
विधायक, डोंगरगढ़
प्रदेश अध्यक्ष
अनुसूचित जाति विकास प्राधिकरण, छत्तीसगढ़

भ्रष्ट व्यवस्था पर प्रहार समय की मांग

छत्तीसगढ़ राज्य बना जरूर लेकिन नौकरशाही और अफसरशाही के भ्रष्ट तंत्र ने प्रदेश को दीमक की तरह कुतरकर खोखला कर दिया है. इस खोखलेपन की पड़ताल पहली बार भूपेश सरकार के कार्यकाल में हुई जो साहस डॉ.रमन सिंह अपने मुख्यमंत्रित्व के पंद्रह वर्षीय कार्यकाल में नहीं दिखा सके वो साहस कांग्रेस शासन काल के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने दिखाया और भ्रष्ट नौकरशाही को निलंबित और बर्खास्त कर बाहर का रास्ता दिखाया है. भूपेश की इस कार्रवाई से भ्रष्ट नौकरशाही और अफसरशाही में कड़ा संदेश गया है. चर्चा ये है कि अभी तो ये अंगड़ाई है आगे और लड़ाई है.

» छ.ग. आजतक ब्यूरो

अंतिम पंक्ति के आम आदमी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को समृद्ध एवं स्वावलंबी बनाने के लिए सर्वोत्तम और सराहनीय योजना, नरवा, गरूवा, घुरवा और बारी से छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में आए व्यापक बदलाव को सहज ही देखा जा सकता है. वर्तमान समय में और इससे पहले कोरोना महामारी की आपात स्थिति में भी छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था और जनजीवन काफी हद तक सामान्य रहा, इसके पीछे नरवा, गरूवा,

घुरवा, बारी योजना के माध्यम से अत्यंत पिछड़े एवं गरीब तबकों तक पहुंच बना चुकी आर्थिक आय ही प्रमुख कारण रही है. इस योजना ने गोबर बीनने वाले को भी समृद्ध और स्वावलंबी बनाया है. गांव में पशुधन की वृद्धि और खेती को लाभकारी बनाने वाली इन योजनाओं से मजदूर और किसान वर्ग को लाभ तो मिला है, लेकिन क्या मुख्यमंत्री और उनकी सरकार की मंशा के अनुरूप सफलता मिली है? यक्ष प्रश्न यह भी है कि नौकरशाही की सामंती सोच और भ्रष्टाचार के चलते जनकल्याणकारी योजनाओं पर ग्रहण क्यों लग रहा है?

मुख्यमंत्री के अतिरिक्त पंचायत स्तर से लेकर जिला और प्रदेश स्तर पर प्रतिनिधित्व करने वाले तमाम जनप्रतिनिधियों की ओर से जनकल्याणकारी योजनाओं को शत-प्रतिशत सफल बनाने तथा हितग्राहियों को उचित लाभ पहुंचाने के लिए कितने प्रयास किए जा रहे हैं लेकिन सरकारी कर्मचारी एवं अधिकारियों की तरह स्थानीय जनप्रतिनिधि भी क्यों उदासीन और लापरवाह हैं, यह शोध का विषय है. वास्तविकता यह है कि अधिकतर क्षेत्रों में उदासीनता और लापरवाही का आलम है. जाहिर है कि विघ्न संतोषी तत्व और विपक्षी दल के लोग इस स्थिति का लाभ उठाने की कोशिश करेंगे. जहां तक नौकरशाही का सवाल है उसे जनसमर्थन से कोई सरोकार नहीं है, क्योंकि उन्हें निर्वाचन में नहीं जाना है. जनसरोकार से दूर नौकरशाह आज भी अपने कर्तव्य के प्रति समर्पित नहीं है क्योंकि वे जन परीक्षा से मुक्त हैं और जनप्रतिनिधि भी ऐसे नौकरशाहों पर लगाम कसने में असफल साबित हो रहे हैं. सरकार की तमाम कोशिशों के बावजूद सरकारी कार्यों में भ्रष्टाचार, ठेकेदारों की मनमानी और पुलिस, पटवारी से लेकर उच्च स्तर तक आम आदमी और विकास कार्य लालफीताशाही के शिकार हैं. गत वर्ष विभिन्न सड़कों के सुधार, उन्नयन एवं निर्माण का लक्ष्य लेकर राज्य सरकार ने 5000 करोड़ की राशि स्वीकृत की थी, लेकिन लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों और उनके चहेते ठेकेदारों ने इसमें पलीता ही लगाया है. नवनिर्मित सड़कें कुछ महीने में ही उखड़ जाती हैं, नदी-नाले पर बनाए जाने वाले पुल-पुलिया बार-बार धराशायी हो जाते हैं और घूसखोर अधिकारी-कर्मचारी कुछ समय बाद ही पुनः उसी कुर्सी पर बहाल हो जाते हैं, यह स्थिति अत्यंत चिंतनीय है. अभी हाल ही में बिलासपुर का एक आरक्षक कई बेरोजगारों को पुलिस में नौकरी दिलाने का झांसा देकर लगभग डेढ़ करोड़ रुपए वसूलने के आरोप में गिरफ्तार हुआ है. जानकारी मिली है कि इससे पहले भी एक बार ऐसे ही कारनामों के लिए उसे निलंबित और दंडित किया जा चुका है. प्रश्न यह उठता है कि ऐसे लोगों की सेवा में वापसी कैसे और क्यों हो रही है?

प्रदेश के मुख्यमंत्री ने भ्रष्टाचार पर नियंत्रण के लिए कदम तो अवश्य उठाए हैं. पुलिस विभाग में ही एक एडीजी स्तर के अधिकारी को जबरिया सेवा निवृत्ति दी गई. ये अधिकारी जेल जा चुका है और वर्तमान में भी उसके खिलाफ कई मामले विचारधीन है. एक अन्य आईपीएस अधिकारी अदालतों के चक्कर लगा रहे हैं और मुंह छुपाने के लिए प्रदेश छोड़कर दिल्ली को अपना निवास बना चुके हैं. छत्तीसगढ़ राज्य गठन के बाद इन अधिकारियों की तूती बोलती थी. इनकी मनमानी और काले कारनामों से न केवल आम नागरिक बल्कि पुलिस विभाग के भी कर्मठ और ईमानदार कर्मचारी अधिकारी परेशान थे, यहां तक कि जिला पुलिस अधीक्षक स्तर के एक युवा अधिकारी ने प्रताड़ित होकर आत्महत्या कर ली थी लेकिन पूर्ववर्ती सरकार के संरक्षण में इसके लिए जिम्मेदार अधिकारी का बालबांका भी नहीं हुआ.

भूपेश बघेल के नेतृत्व में जैसी कि जनापेक्षा थी मुख्यमंत्री ने ऐसे भ्रष्ट तत्वों पर न केवल नकेल कसा बल्कि उन्हें दंडित करने की भी कार्रवाई की. वरिष्ठ सचिव स्तर के एक आईएएस अधिकारी जिन्होंने सैकड़ों अबोध ग्रामीणों के नाम बैंक खाता खोलकर करोड़ों की हेरा फेरी की थी, उनके काले कारनामों का भांडाफोड़ हुआ और वे जेल भी गए. निलंबन और बर्खास्तगी की कार्रवाई भी हुई, लेकिन कैट के माध्यम से इस अधिकारी ने अपनी वापसी कराने में सफलता पाई. कुछ बुद्धिजीवियों का मानना है कि जब तक वर्तमान व्यवस्था में व्यापक सुधार नहीं होगा, नियम कानून बदले नहीं जाएंगे और सरकारी कर्मचारियों, अधिकारियों के निलंबन, स्थानांतरण एवं बर्खास्तगी के संबंध में न्यायालयीन हस्तक्षेप कम और ढीले नहीं किए जाएंगे, तब तक नौकरशाही को नियंत्रित कर पाना बहुत कठिन रहेगा. तमाम चुनौतियों, कठिनाइयों और दबावों के बावजूद मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने साहस और निष्पक्षता के साथ भ्रष्ट नौकरशाहों को सबक सिखाने और व्यवस्था में सुधार लाने के लिए कड़े कदम उठाए हैं, उसकी सरहाना की जानी चाहिए.

यद्यपि वर्तमान में भी तमाम आईएएस, आईपीएस अधिकारियों के खिलाफ जांच कार्रवाई चल रही है. कुछ प्रशासनिक अधिकारी जेल में भी हैं, लेकिन प्रशासनिक व्यवस्था में अपेक्षित सुधार हुआ हो ऐसा नहीं कहा जा सकता. अभी ताजा मामला शिक्षा विभाग का है जहां हजारों शिक्षकों के स्थानांतरण और पदोन्नति में अधिकारियों ने बड़े पैमाने पर आर्थिक वसूली कर शासकीय निर्देशों की अवहेलना करते हुए मनमानी तौर पर पदोन्नति और स्थानांतरण को अंजाम दिया है. इस मामले के उजागर होते ही मुख्यमंत्री के निर्देश पर दर्जन भर से अधिक भ्रष्ट अधिकारी निलंबित किए जा चुके है. मामले की उच्च स्तरीय जांच की जा रही है और पीड़ित शिक्षकों को न्याय देने की कार्रवाई भी जारी है. इस मामले से यह स्पष्ट है कि सरकारी विभागों में भ्रष्टाचार और अधिकारियों की मनमानी किस स्तर तक व्याप्त है. जाहिर है कि "अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता". सभी जनप्रतिनिधियों एवं जिम्मेदार लोगों को मुख्यमंत्री की तर्ज पर निर्भीकता पूर्वक अपनी जवाबदेही का निर्वाह करते हुए जनहित एवं प्रशासनिक कसावट के लिए कड़े कदम उठाने होंगे. प्रदेश की उन्नति और जन विकास के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी का निर्वाह आवश्यक है. प्रदेश सरकार ने छत्तीसगढ़ के विकास और सरकारी योजनाओं का लाभ सबसे पिछड़े और दुर्बल जनों तक पहुंचाने के लिए तमाम लाभकारी योजनाएं लागू की है, इन योजनाओं की सफलता के लिए हर जागरूक नागरिक और खासकर जनप्रतिनिधियों को पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ निरंतर जागरूक और सक्रिय रहना होगा, तभी मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप छत्तीसगढ़ के नवनिर्माण और उत्थान में सफलता मिलेगी.

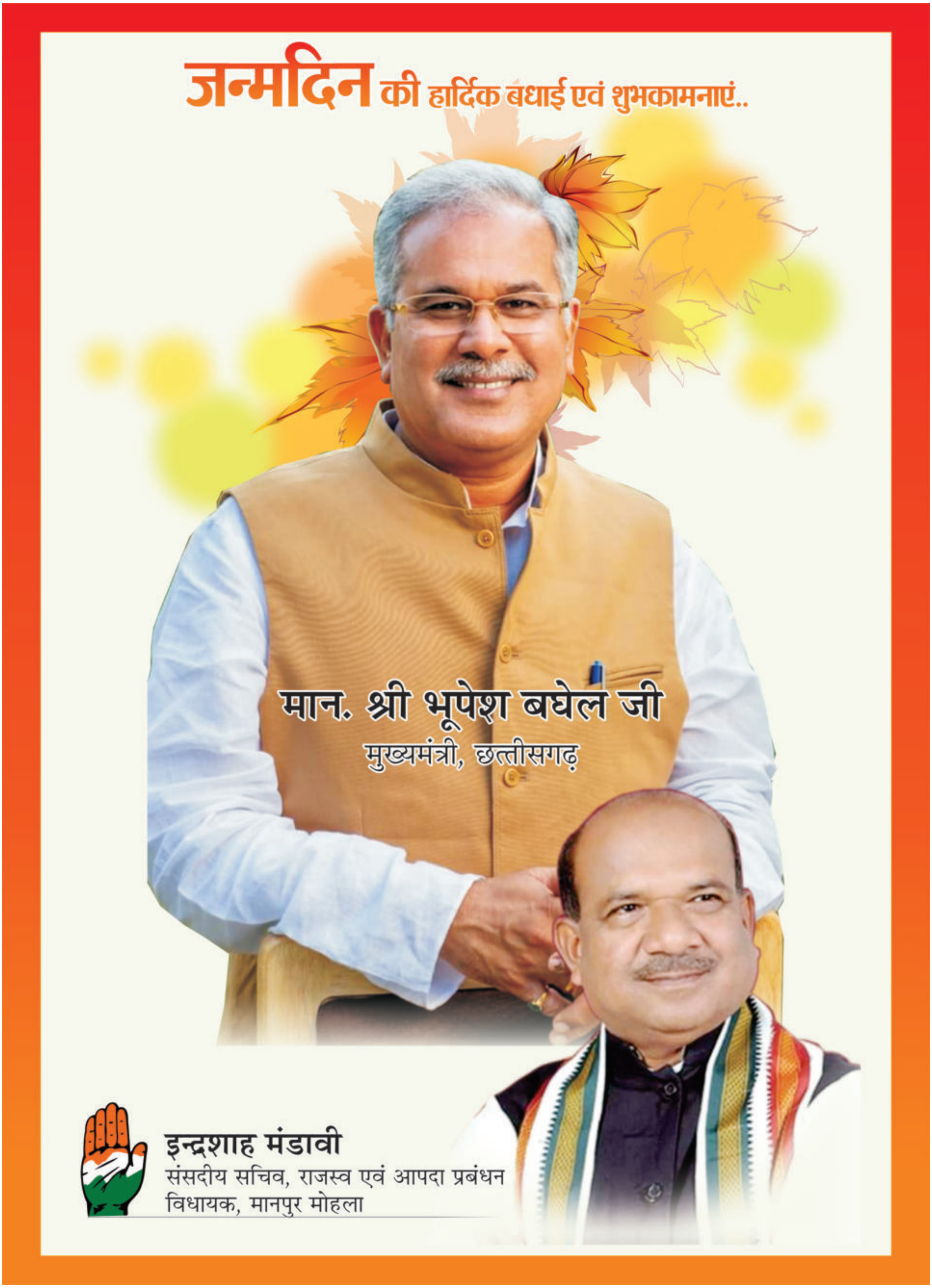
जन्मदिन की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं..
मान. श्री भूपेश बघेल जी
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़
इन्द्रशाह मंडावी
संसदीय सचिव, राजस्व एवं आपदा प्रबंधन
विधायक, मानपुर मोहला

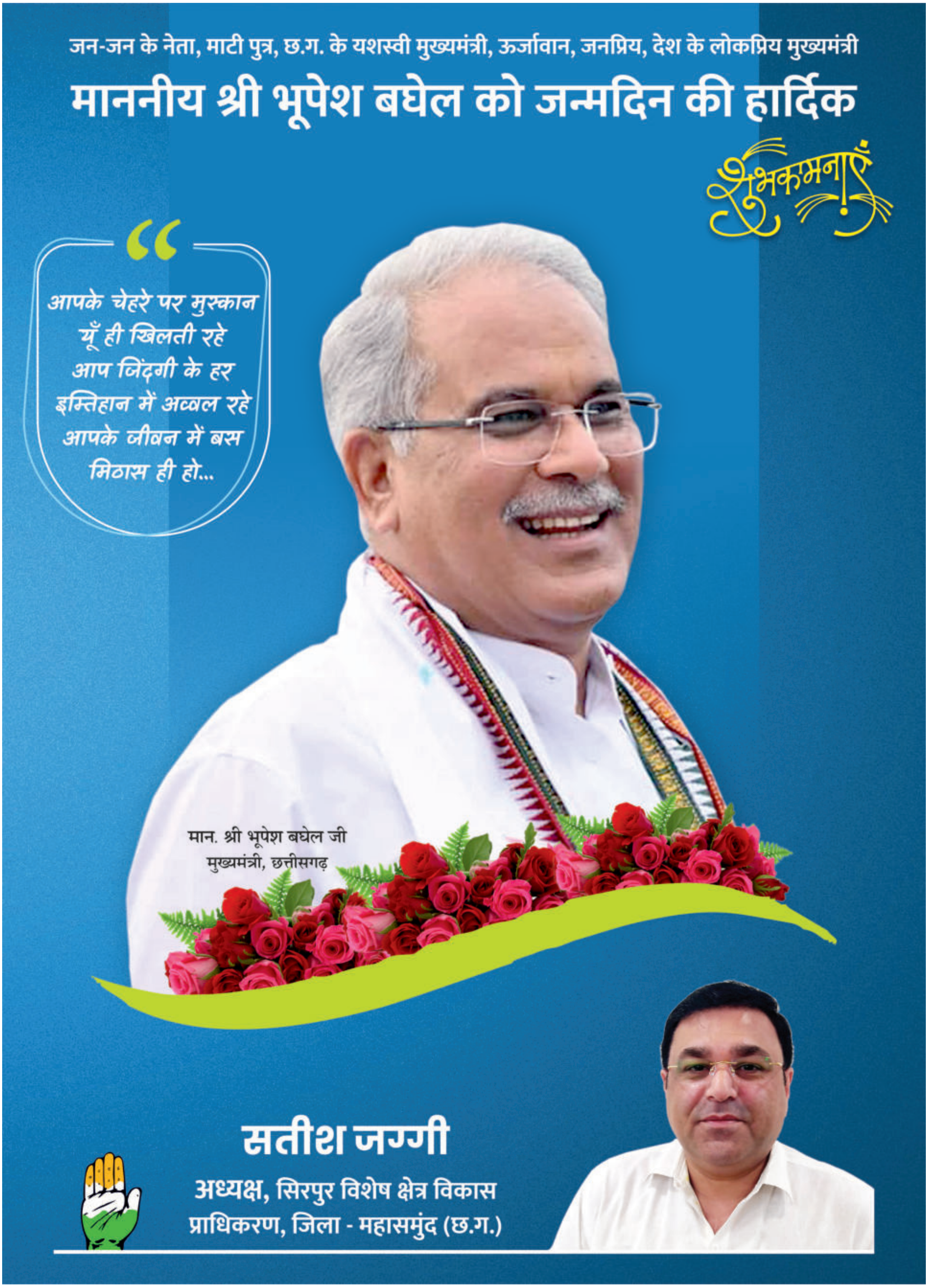

जन-जन के नेता, माटी पुत्र, छ.ग. के यशस्वी मुख्यमंत्री, ऊर्जावान, जनप्रिय, देश के लोकप्रिय मुख्यमंत्री
माननीय श्री भूपेश बघेल को जन्मदिन की हार्दिक
शुभकामनाएं
आपके चेहरे पर मुस्कान
यूँ ही खिलती रहे
आप जिंदगी के हर
इम्तिहान में अव्वल रहे
आपके जीवन में बस
मिठास ही हो...
मान. श्री भूपेश बघेल जी
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़
सतीश जग्गी
अध्यक्ष, सिरपुर विशेष क्षेत्र विकास
प्राधिकरण, जिला - महासमुंद (छ.ग.)

भाजपा के पास नहीं है भूपेश जैसा चेहरा

भाजपा चाहे जितना जोर लगा ले, भूपेश की टक्कर का कोई नेता खड़ा करना उसके लिए फिलहाल तो मुश्किल ही दिखाई देता है. गाँव, गरीब और किसानों के लिए जितनी योजनाएँ भूपेश सरकार लेकर आई है, वह पूरे भारत के परिदृश्य में अनुपम, अतुलनीय है. श्री बघेल न तो रुकते हैं और न ही थकते हैं. जब भी उनसे मिलो, हमेशा तरोताजा नजर आते हैं. यही खूबी 'बाबूजी' अर्थात मोतीलाल वोरा में भी थी. 92 साल की उम्र में भी उनकी सक्रियता देखते ही बनती थी. उक्त बातें दुर्ग विधायक अरुण वोरा ने कहीं.

» छ.ग. आजतक ब्यूरो

वे छत्तीसगढ़ आजतक से चुनाव पूर्व चर्चा कर रहे थे. सवालों का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि बाबूजी का दौर कुछ और था. लगभग सभी नेता सुबह से शाम तक जनता के लिए उपलब्ध रहते थे. मीलों पदयात्रा करने के बाद भी वे रात की बैठक करना नहीं भूलते थे. थकान उन्हें छूकर नहीं जाती थी. वे पूरी तन्मयता से कार्यकर्ताओं और अन्य लोगों की बातें सुनते थे और समस्याओं का हल मिलकर ढूँढने की कोशिश करते थे. यही गुण आज भूपेश बघेल में भी दिखाई देते हैं.

मुख्यमंत्री के विषय में वोरा का कहना था कि 'कका' को उन्होंने जब भी देखा है ऊर्जा और सकारात्मकता से परिपूर्ण ही पाया है. वे एक ऐसे जनप्रतिनिधि हैं जो जनसाधारण के बीच घुलमिल जाते हैं. उनके साथ सहज रहते हैं. इससे जनता भी उनके आगे खुलकर अपने मन की बात कर पाती है. इसकी झलक उनकी योजनाओं में भी दिखाई देती है.

छत्तीसगढ़ का बढ़ाया मान

वोरा ने कहा कि काम करने वाला कभी खुद को कमजोर महसूस नहीं करता. काम करने पर ऊर्जा घटती नहीं बल्कि और बढ़ जाती है. यह बात उन्होंने 'बाबूजी' से सीखी थी. भूपेश बघेल भी दिन-रात काम करते हैं. अपने छोटे से कार्यकाल में उन्होंने छत्तीसगढ़ का नाम पूरे देश दुनिया में स्थापित कर दिया है. आज छत्तीसगढ़ी खान-पान, तीज त्यौहार, पहनावा ओढ़ावा के बारे में पूरी

> "मेरे पिता 92 साल की उम्र में उतने ही सक्रिय थे, जितना कि वे शुरूआती दौर में थे. जब वे पार्षद थे तब मै 11 साल का था. उस जमाने में वे जितने सक्रिय थे वही स्थिति 92 साल के उम्र तक बनी रही. वे किसी बात को लेकर हताश और निराश नहीं होते थे कि मैं यह काम नहीं कर सकता. मैंने उन्हें हर काम उत्साहपूर्वक करते देखा है. यही बात मैंने उनसे सीखी थी. आज भी वो हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं. भूपेश बघेल को देखकर उनकी याद आती है."
>
> ● अरुण वोरा, **विधायक**

चर्चा

» छत्तीसगढ़ को दिलाई अंतरराष्ट्रीय पहचान

» न रुकते हैं न थकते हैं

» बघेल को देखकर आती है 'बाबूजी' की याद

दुनिया जानती है. और तो और उन्होंने 'बोरे-बासी' का मान इतना बढ़ा दिया कि आज आईएएस-आईपीएस अधिकारी भी उसका स्वाद और गुण जानते हैं.

पार्टी के सच्चे सिपाही

अगले चुनाव में संभावनाओं पर चर्चा करते हुए विधायक ने कहा कि अब छापे से जीतने के दिन लद गए. अब तो वही जीतता है जो जनता के बीच रहता है, उसे उपलब्ध रहता है. उन्होंने कहा कि पार्टी का सच्चा सिपाही वही होता है जो अपनी पार्टी की रीति-नीति का पालन करता है. उसका पूरा जीवन, उसकी सोच सबकुछ पार्टी को समर्पित होती है. वह अपनी उपलब्धियों का श्रेय भी पार्टी को देता है और पार्टी के निर्देश पर स्वयं को झोंक देता है. बाबूजी भी ऐसे ही थे, भूपेश भी ऐसे ही हैं और वे स्वयं भी ऐसा ही करते हैं. वे कहते हैं, 'हम सभी पार्टी के कार्यकर्ता हैं, पार्टी टिकट देती है तो चुनाव लड़ते हैं. विधायक या मंत्री नहीं भी रहे तब भी जनता से सतत् सम्पर्क बना रहता है.'

भाजपा के पास नहीं है कोई चेहरा

अरुण वोरा ने कहा कि अभी प्रदेश में सबसे बड़ा राजनीतिक चेहरा भूपेश बघेल का है. भाजपा का कोई भी चेहरा उनके सामने नहीं टिकता. भाजपा के कद्दावर नेता और केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह भी आकर गए हैं लेकिन भूपेश बघेल के लिए कोई चुनौती खड़ा करने में वो भी असफल ही रहे. कांग्रेस अगला चुनाव भी भूपेश के चेहरे पर ही लड़ेगी. अभी कांग्रेस के पास छत्तीसगढ़ विधानसभा में 71 सीटें हैं. हमारा लक्ष्य इस संख्या को 75 से पार ले जाने का है.

राजनीति के लिए चाहिए केवल जज्बा

अरुण वोरा ने कहा कि राजनैतिक क्षेत्र में भी आज पढ़े-लिखे लोगों की जरूरत है ताकि वे बेहतर बहस कर पाएँ. वैसे जो लोग शिक्षा से वंचित रह गए थे, उन्होंने भी छत्तीसगढ़ में अच्छा काम किया है. कवासी लखमा का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि लखमा छह-छह बार के विधायक हैं. उद्योग मंत्री हैं और अच्छा काम कर रहे हैं. विधानसभा में अपनी वाकपटुता से वे विपक्ष को निरुत्तर कर देते हैं.

युवाओं को समर्पित सरकार

अरुण वोरा ने कहा कि सीएम ने हाल ही में संभाग स्तरीय युवा सम्मेलन बुलाया है. छत्तीसगढ़ सरकार उनके लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध करा रही है. छत्तीसगढ़ में रोजगार का जो प्रतिशत है वो देश में सबसे ज्यादा है. युवाओं को जो ढाई हजार रुपए प्रोत्साहन राशि दी जा रही है उसका उद्देश्य युवाओं को सक्षम बनाना है. ताकि वे अपनी पसंद की दिशा में आगे बढ़ सकें, कोचिंग ले सके. यह कोई बेरोजगारी भत्ता नहीं बल्कि सहयोग राशि है. सरकार चाहती है, कि युवा अच्छी पढ़ाई करें, शैक्षणिक रूप से सामर्थ्यवान बनें. प्रतियोगी परीक्षाओं की ओर उनका रुझान बढ़े. वे पीएससी, यूपीएससी की परीक्षा में बैठें और अपना करियर बनाएँ.

ग्रामोन्मुखी सरकार ने समझा महिलाओं का दर्द

स्व सहायता समूहों के उत्पादों का विपणन हुआ आसान

छत्तीसगढ़ की भूपेश सरकार की ग्रामोन्मुखी योजनाओं का लाभ महिला स्व सहायता समूहों को मिलने लगा है. विपणन की शासन की योजनाओं से समूहों में नई उम्मीदें जागी हैं. पद्मश्री फुलबासन यादव का एनजीओ मां बम्लेश्वरी जनहितकारी समिति लगातार योजनाओं का लाभ समूहों को दिलाने में लगी हुई है. इसके लिए गांव-गांव जाने के साथ ही वे विपणन नेटवर्क को मजबूत करने देशभर का भी दौरा कर रही हैं.

छत्तीसगढ़ के सभी जिलों में "मोर बाजार सबको रोजगार"

देश के प्रमुख मंदिरों में चढ़ेगा "महुआ लड्डू" का प्रसाद

» **दीपक रंजन दास**

फुलबासन यादव से टेलीफोन पर कई हिस्सों में हुई बातचीत के आधार पर यह रिपोर्ट प्रस्तुत की जा रही है जो नई उम्मीदें जगाती हैं.

जब पद्मश्री फूलबासन से पहली बार बात हुई तो वे मुम्बई के लिए रवाना हो रही थीं. लौटने के बाद वे तत्काल अयोध्या के लिए निकल गईं जहां से उन्हें प्रयागराज जाना है. अयोध्या के हनुमानगढ़ी क्षेत्र के मंदिरों से उन्हें अच्छा प्रतिसाद मिला है. छत्तीसगढ़ की महिला स्व सहायता समूहों द्वारा तैयार "महुआ लड्डू" का अब यहां प्रसाद के रूप में उपयोग किया जाएगा. उन्होंने बताया कि इस लड्डू की खास बात यह है कि दो लड्डू खाकर पानी पी लेने से न केवल दिन भर काम करने की ऊर्जा मिल जाती है बल्कि भूख-प्यास भी कम लगती है. इसका सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि आदिवासी इलाकों में महुआ का शराब बनाने और बेचने की प्रक्रिया में कमी आएगी और लोग नशे में पड़कर बर्बाद होने से बच जाएंगे.

टेलीफोन पर हुई चर्चा में पद्मश्री फूलबासन ने छत्तीसगढ़ की भूपेश सरकार की जमकर तारीफ है. उन्होंने बताया कि गोठानों को रूरल इंडस्ट्रियल पार्क बनाने की योजना का लाभ अभी प्रारंभिक अवस्था

में है पर योजना के आगे बढ़ने पर इसका लाभ ग्रामीण महिला स्व सहायता समूहों को मिलने लगेगा. उन्होंने बताया कि समूहों से जुड़ी महिलाओं को फिलहाल विभिन्न कौशल का प्रशिक्षण तो मिल रहा है, उत्पाद भी तैयार हो रहे हैं पर विपणन अभी भी काफी कठिन है. विपणन में बाधा आने पर न केवल समूह हतोत्साहित होते हैं बल्कि उनमें आगे काम करने की रुचि भी खत्म हो जाती है. इसलिए इस दिशा में तेजी से काम करने की आवश्यकता है.

फूलबासन ने बताया कि हालांकि शासन के किसी अधिकारी से अब तक उनकी मुलाकात नहीं हुई है और न ही किसी ने कोई पहल की है पर गांव-गांव में शासन द्वारा किये जा रहे प्रयासों की उन्हें खबर है. इस सबसे परे उनका अपना एनजीओ समूह की महिलाओं के उत्पादो की बिक्री के लिए बाजार तैयार करने में जी जान से जुटा हुआ है. “गांव वाली” ब्रांड के तहत बनाए जा रहे उनके उत्पादों को बाजार में अच्छा प्रतिसाद मिला है. इस ब्रांड के तहत बेची जाने वाली वस्तुओं में भी तेजी से इजाफा हुआ है. मसालों से शुरू होकर यह योजना अब आर्गेनिक चावल, कच्ची घानी का तेल, सुगंधित केश तेल की तरफ अग्रसर हुआ है. महुआ लड्डू को भी इसी ब्रांड के तहत बेचा जा रहा है.

ऐसे हुआ गांवों में काम का बंटवारा

छत्तीसगढ़ शासन की दूरदर्शिता की प्रशंसा करते हुए फूलबासन ने कहा कि शासन ने गरीब और बहुत गरीब लोगों को उद्यमिता से जोड़ने के लिए विशेष प्रयास किये हैं. इसमें गरीबों के साथ ही विकलांगों और किन्नरों को भी शामिल किया गया है. वनोपज संग्राहकों से लेकर सामान की ढुलाई करने वाले, उत्पादों को तैयार करने वाले, उत्पादों की पैकिंग करने वाले और उसके विपणन नेटवर्क पर काम करने वालों की एक नई जमात पैदा हो रही है. उन्होंने बताया कि उनके एनजीओ में अलग –अलग कार्यों में नियोजित लोगों को 6 हजार रुपए से लेकर 90 हजार रुपए तक की आमदनी हो रही है.

आयुर्वेदिक दवाइयों पर भी काम शुरू

फूलबासन ने बताया कि छत्तीसगढ़ में वनोपज संग्राहकों और बागवानी कर आयुर्वेदिक औषधि के विभिन्न अवयवों को उत्पन्न करने वालों को भी नेटवर्क से जोड़ दिया गया है जिससे उन्होंने अपने संग्रह और उपज की बेहतर कीमत मिल रही है. सीमांत किसानों को भी इसका फायदा मिल रहा है. इससे आयुर्वेदिक औषधि बाजार में छत्तीसगढ़ की उपस्थिति को भी बल मिला है. आने वाले दिनों में छत्तीसगढ़ के वनोपज संग्राहकों और लघु उद्यानिकी से जुड़े गरीब परिवारों को भी इसका लाभ मिलने लगेगा.

मार्केटिंग नेटवर्क का कमाल

फूलबासन ने बताया कि इस बीच मां बम्लेश्वरी जनहितकारी समूह के कामकाज में भी भारी इजाफा हुआ है. आज ढाई लाख से ज्यादा स्व-सहायता समूहों की महिलाएं उनके नेटवर्क से जुड़ी हैं. कोविड काल की यादों को ताजा करते हुए उन्होंने कहा कि किसी को अंदाजा नहीं था कि जिमी कांदा उगाकर भी करोड़ों का व्यापार किया जा सकता है. उनके एनजीओ से जुड़ी दो लाख से अधिक महिलाओं ने अपनी अपनी बाड़ी में उगाकर लगभग दस करोड़ रुपए के जिमीकांदा का विक्रय किया था. केवल स्थानीय बाजार के भरोसे रहने पर यह एक असंभव लक्ष्य था. उन्होंने बताया कि शासन के सी-मार्ट तो अभी शुरू ही हुई हैं पर यदि गंभीरता के साथ इसपर काम किया जाए तो इसके बहुत अच्छे नतीजे आ सकते हैं.

इन योजनाओं का मिल रहा लाभ

फूलबासन ने बताया कि अब तक स्व सहायता समूह राष्ट्रीय आजीविका मिशन के तहत काम कर रही थीं. अथक मेहनत और पाई-पाई जोड़कर उन्होंने अपनी विश्वसनीयता स्थापित की है. पर अकेले इस मिशन से गरीब महिलाओं का जीवन बदलने का सपना अधूरा ही रह जाता. उनका एनजीओ घुरवा और बाड़ी योजना पर तो काम कर ही रहा था पर जब भूपेश सरकार ने नरवा-गरुवा-घुरवा-बाड़ी योजना शुरू की तो स्व सहायता समूहों के कामकाज में भी अभूतपूर्व तेजी आ गई. योजना के तहत बने गोठान उनके लिए वरदान साबित हुए. हालांकि बहुत कम गोठानों को ही फिलहाल सफल कहा जा सकता है पर इससे गांव-गांव में आजीविका के नए साधन-संसाधन विकसित हो गए हैं. महिला समूहों को काम और काम करने की जगह दोनों की सुविधा हो गई है.

“गांव-वाली” ब्रांड में बढ़ रहे उत्पाद

फूलबासन ने बताया कि “गांव-वाली” ब्राण्ड पतंजलि ब्राण्ड को अपना आदर्श मानकर काम कर रही है. इस ब्राण्ड के अंतर्गत आकर्षक स्टैण्डर्ड पैकिंग में चावल, हल्दी, धनिया, मिर्ची, बड़ी, पापड़, कच्ची घानी का तेल, खुशबू वाला तेल, आदि को उपलब्ध कराया जा रहा है. ये सभी उत्पाद आर्गेनिक है जिसे लोग खूब पसंद कर रहे हैं. गोठानों में बन रही वर्मीकम्पोस्ट खाद का इसमें उपयोग हो रहा है जिससे गोठानों की भी आमदनी सुनिश्चित हो रही है. उनकी कोशिश है कि सफल इकाइयों से राज्य के 33 जिलों में चल रहे प्रयासों को भी प्रेरित किया जा सके. उन्होंने “गांव-वाली” ब्राण्ड की फ्रेंचाइजी देने की भी योजना बनाई है जिसमें ठेला-पसरा लगाकर व्यापार करने वालों

को भी शामिल किया जा सकेगा.

फूलबासन की अब तक की यात्रा

फूलबासन यादव का जन्म एक अत्यंत गरीब परिवार में हुआ. अल्पायु में ही उनका विवाह राजनांदगांव के सुकुलदैहान के एक उतने ही निर्धन परिवार में हुआ. बकरी चराकर वे किसी तरह अपना और बच्चों का पेट भरने की कोशिश करती. उन्होंने 2 रुपए और दो मुट्ठी चावल के तहत पहला स्वसहायता समूह गठित किया. इसकी सफलता से और भी समूह बनने लगे. जिला प्रशासन के सहयोग से इस प्रक्रिया में अभूतपूर्व तेजी आई और वनांचलों की महिलाएं भी समूह बनाकर काम करने लगीं. उन्होंने अपने स्वयं के समूह बनाए- जैसे कि प्रज्ञा महिला समूह, किराया भंडार, बाज़ार ठेका और गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) लोगों के बीच राशन वितरण के लिए दुकानें स्थापित कीं. बाद में, उन्होंने गैर सरकारी संगठन, माँ बम्लेश्वरी जनहित कार्य समिति का गठन करके गतिविधियों को एक छतरी के नीचे समेकित किया. उनका संगठन 12000 महिला स्वयं सहायता समूहों तक फैल गया जिसमें 2.5 लाख से अधिक महिलाएं जुड़ी हुई हैं. छोटे-छोटे संग्रहों से उनके संगठन ने 150 मिलियन का कोष जमा किया है, जो 3 मिलियन अमेरिकी डॉलर के बराबर है. उनके समूह स्वास्थ्य कार्यक्रम, शिक्षा, स्वच्छता और सामाजिक सुधार जैसी गतिविधियों में संलग्न हैं. वे बच्चों के लिए निःशुल्क स्कूल और सभी के लिए निःशुल्क अस्पताल स्थापित करना चाहती हैं. वे वृद्धों और अशक्तों के लिए भी आश्रम की स्थापना कर रही हैं.

फूलबासन का एनजीओ नियमित पोलियो वैक्सीन क्लीनिक, स्कूल और आंगनवाड़ी संचालित करता है. बाल भोज जैसे खाद्य कार्यक्रमों के अलावा महिलाओं के लिए सिलाई केंद्रों की स्थापना, नशाखोरी और बाल विवाह के खिलाफ अभियान चलाता है. संगठन ने 54 बच्चों को गोद लिया है. शराब बंदी के लिए सामाजिक अभियान शुरू किए हैं जिसके तहत अब तक 250 शराब दुकानों को बंद कराने में सफलता मिली है. संगठन को राजस्थान सरकार द्वारा कन्या भ्रूण हत्या रोकथाम के लिए ब्रांड एंबेसडर नामित किया गया है.

"दबंग दीदी" बदल रहीं गांव की सूरत

गरियाबंद में फूलबासन ने 50 समूह की 100 महिलाओं को ग्रामीण कुरीतियों और व्यवस्थाओं के खिलाफ तैयार किया है. इन्हें दबंग दीदी नाम दिया गया है. प्रशिक्षण के बाद ये महिलाएं अपने गांव की अन्य महिलाओं को जोड़ेंगी और गांव में स्वरोजगार के साथ-साथ सुरक्षा, स्वच्छता एवं नशामुक्ति का अभियान चलाएंगी. फूलबासन बाई व स्थानीय जिला पंचायत सदस्य धनमती यादव ने 100 महिलाओं को टोपी, सीटी व डंडा भेंट कर समूह की दबंग दीदी का दर्जा दिया. साथ ही उन्हें बताया कि लोग उन्हें आगे बढ़ने से रोक सकते हैं, लेकिन हिम्मत से काम लेना होगा, जिससे सफलता मिले. फूलबासन ने बताया कि राजनांदगांव जिले में भी फौज की दीदियों को गांव के लोगों के ताने सुनने पड़े थे. लोगों ने उनका मनोबल गिराने की भी कोशिश की. लेकिन हिम्मत से काम लेने वाली हर महिला आज सफल है. ऐसा ही गरियाबंद में भी कर दिखाना होगा.

साइंस कालेज ने किया एमओयू

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय (साइंस कालेज) ने फूलबासन के एनजीओ के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है ताकि महाविद्यालय के विद्यार्थियों को उद्यमिता के लिए प्रेरित किया जा सके. महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ आरएन सिंह ने बताया कि महिला सशक्तिकरण का पर्याय बन चुकी पद्मश्री फूलबासन ने अपने दम पर जिस तरह लगभग दो लाख महिलाओं को अपने स्व सहायता समूह से जोड़कर प्रदेश एवं देश में जरूरतमंद महिलाओं के लिए एक आर्थिक मिसाल कायम की है वह महाविद्यालय के लिए भी अनुकरणीय है. अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों को उनकी कार्यशैली के अध्ययन के लिए भेजने के सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए. महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने बमलेश्वरी महिला प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड 'गाँववाली' द्वारा संचालित ग्रामीण उद्योगों का बारीकी से अध्ययन भी किया है. इसके अंतर्गत मसाला उद्योग, बकरी पालन, मत्स्य पालन एवं डेयरी उद्योग के द्वारा आसपास की महिलाएं किस तरह आर्थिक रूप से सशक्त होकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती दे रही हैं यह देखकर आश्चर्य हुआ.

पूरे राज्य में हो रहा असर

पद्मश्री फुलबासन यादव का मानना है कि महिलाएं एक दूसरे का सहयोग कर आगे बढ़ें तो कुछ भी असंभव नहीं है. 20 साल पहले उनके पास खाने को नहीं था और आज ढाई लाख महिलाएं उनसे स्व सहायता समूहों के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हैं. इनके खाते में बचत की राशि 40 करोड़ से अधिक हो गई है. सफलता की उनकी कहानी से राज्य के अनेक जिलों की महिलाएं प्रेरित हुई हैं. जहां भी जरूरत पड़ती है और वे स्वयं जाकर महिलाओं की मदद करती हैं. गरियाबंद जिले की ग्रामीण महिलाओं को भी उनका एनजीओ स्वरोजगार, सुरक्षा और स्वच्छता से जोड़ने के लिए प्रशिक्षित कर रहा है.

मानननीय
श्री भूपेश बघेल जी
को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं
क्षितिज चन्द्राकर
जयंत देशमुख
सिद्धार्थ चंद्राकर
दीप सारस्वत
लव चक्रधारी
मनीष चन्द्राकर
विनीत - सिद्धार्थ कन्ट्रक्शन, मोर भुइयां के स्वाद, लोकेश कन्ट्रक्शन, राधे आर्ट् गैलरी
गौरी ट्रॉसपोर्ट, सांई ब्रिक्स, स्काई हाईट्स स्कूल गुण्डरदेही, कालिन्द्री ग्राफिक्स

देव **बिहाव**

मां दंतेश्वरी की बिटिया बनी नेतानरीन की बहु

जगदलपुर. नेतानार की किचकरास डोंगरी ऊपर ध्रुवा समाज की आराध्या नेतानारीन के पुत्र मुन्नादेव और मावलीपदर निवासी मां दंतेश्वरी की बिटिया मुन्नादई का आदिवासी परंपरानुसार देव बिहाव कराया गया. इस मौके पर 48 गांवों के देवी - देवता और ग्रामीण बड़ी संख्या में मौजूद रहे. ये सभी रात भर सामूहिक नृत्य किए और मंगलवार को आमंत्रित देवों को विदाई देकर घर लौटे.

35 साल बाद देव बिहाव

जिला मुख्यालय से 28 किमी दूर नेतानार की बड़ेगुड़ी में वर्ष 1988 में देव बिहाव कराया गया था. 35 साल बाद इस परंपरा को दोहराया गया. नेतानार बड़ेगुड़ी पुजारी चाकूराम, माता कारिया पुजारी सहदेव, परगना मांझी सुखदेव के अलावा दुबेयधुर, फानेकधुर, बिजलीधुर परिवार और पुनू बोडका पुजारी ने देव बिहाव कराया. मावलीपदर वालों ने बेटी दी है इसलिए वहां के ग्रामीण नेतानार में आयोजित देव बिहाव में शामिल नहीं हुए.

बताते चलें कि नेतानार गांव बस्तर के क्रान्तिवीर शहीद गुंडाधुर की जन्म स्थली है. इसके किचकरास पारा से लगी डोंगरी में सैकड़ों वर्ष पुरानी देव गुड़ियां हैं. इस वनाच्छादित डोंगरी में स्थानीय 21 देवी-देवताओं का वास है.

देव बिहाव के लिए एकत्र किए लाखों रुपये और चावल

देव विवाह की तैयारी नेतानार के ग्रामीण तीन सप्ताह से कर रहे थे. यहां के 1100 घरों में रहने वाले प्रत्येक परिवार ने दो किलो चावल, नगद 500 रूपये तथा 50 नग दोना पत्तल सहयोग स्वरुप भंडार गुड़ी को अर्पित किए गए. देव बिहाव के चलते नेतानार तथा इसके सात पारा में मंगलवार से गुरुवार तक कृषि कार्य बंद रहा. गांव वालों का ध्यान न भटके इसलिए ग्राम सभा ने आदेश जारी कर कहा था कि सामूहिक निर्णय की अवहेलना कर हल चलाने पर 1000 तथा ट्रैक्टर से जुताई पर 3000 रुपया अर्थदंड लगाया जाएगा, पर इसकी नौबत नहीं आई.

जननायक स्व. देवी प्रसाद चौबे
के स्मृति में वसुंधरा सम्मान प्रदान करने पावन अवसर एवं
श्रीमति कुमारी देवी चौबे
शासकीय कृषि महाविद्यालय नवनिर्मित भवन के
उद्घाटन समारोह
मुख्य अतिथि
मान. भूपेश बघेल जी
मुख्यमंत्री,छ.ग.शासन
अध्यक्षता
मान.ताम्रध्वज साहू जी
केबिनेट मंत्री,छ.ग.शासन
किसान सम्मेलन में पधारे सभी अतिथियों का
स्वागत.. वंदन.. अभिनंदन..
दिनांक : 14 अगस्त 2023 । समय : दो. 1 बजे अगस्त । स्थान : ग्राम मोहगांव (साजा)
मान. श्री अविनाश चौबे
शिवकुमार वर्मा (अध्यक्ष ब्लाक कांग्रेस कमेटी धमधा)
राजीव गुप्ता (महामंत्री जिला कांग्रेस कमेटी दुर्ग)
शमशीर कुरैशी (सभापति जिला पंचायत दुर्ग)
जीवनलाल वर्मा (पूर्व अध्यक्ष जिला पंचायत दुर्ग)
श्रीमती सुनीता गुप्ता (अध्यक्ष नगर पंचायत धमधा)
श्रीमती देहुति गुप्ता (उपाध्यक्ष जनपद पंचायत धमधा)
अशोक कसार (उपाध्यक्ष नगर पंचायत धमधा)
मधुसुदन राणा (ब्लाक अध्यक्ष युवा कांग्रेस धमधा)
मान. श्री रविन्द्र चौबे जी
(मंत्री- पंचायत,शिक्षा,पशुपालन एवं आयकट विभाग छ.ग.शासन)
विनीत - समस्त कांग्रेसजन धमधा क्षेत्र

चुनाव- मौसम

लेखक
जी. आर. राणा
पूर्व अध्यक्ष, छ.ग. राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग

प्रजातंत्र के नभ में
बादल घुमड़ रहे हैं
हरियाये वोट के बिरवा
मौसम बदल रहे हैं

आया चुनाव-मौसम
नेता मचल रहे हैं
वोटों का वसंत आया
वोटर गमक उठे है

माइक की शान देखो
नेता के होंठ चूम रहे है
मद-मस्त मंच, वक्ता
श्रोता महक उठे है

कलफदार कुरते है
ऐसे चमक रहे हैं
मछली है मानो वोटर
बगुले- भगत ठगे है

उम्मीदवार का चकवा
स्वाति की बूँद मत है
परिणाम पूरनमासी
अमृत टपका रहे हैं

जीत के लिये गुलदस्ता
गले में हार डाले
विजय की धमा- चौकड़ी
कैसे मचा रहे हैं

किस्मत का वीर वो है
जिसने चुनाव जीता
पराजित वो अभागा,
कैसे दीन बने हैं

समर्थक बने सिपाही
भाषक बने प्रचारक
थिरकें- झूमें- नाचें
आठों पहर जुटे हैं

आशा के बीज बोकर
भाषण की खाद डाले
है राजनीति की खेती
फसलें उगा रहे हैं

बैनर सजे पताका
नारे लगा रहे हैं
आशा, विकास, सपना
दिन में दिखा रहे हैं

उम्मीदवार याचक
दाता बने हैं वोटर
ले वोट का कटोरा
दर- दर भटक रहे हैं

विकास की प्रणेता
खेवनहार बताते
पतवार थामे अगुवा
खुद को बता रहे हैं

विकास के विरोधी
अवरोध धूर्त निकम्मा
दूसरा पक्ष है ही
ऐसा बता रहे हैं

जीता है वो शूरमा
खुशियों की जाम थामे
समर्थक के साथ झूमे
सबसे बड़े बने हैं

हारे हुए है बेचारे
गम के गिलास थामे
अस्मत लुटी- सी अबला
मातम मना रहे हैं

भ्रम में पड़े न कोई
जनता नहीं है भोली
किसको उठाये पटके
कोई समझ न पाये

स्वतंत्रता दिवस
की प्रदेशवासियों को
हार्दिक
शुभकामनाएं
भाग्यशाली हैं वो
जिन्होंने लिये हैं इस
पवित्र धरती पर जन्म
अनेकता में एकता की
मिसाल कायम करते यहां
विरासत, संस्कृति और धर्म
श्रीमती सुशीला भट्ट जी
अध्यक्ष
जिला पंचायत कबीरधाम (छ.ग.)
श्री राम कुमार भट्ट जी
जिला पंचायत सदस्य
प्रथम जिला पंचायत अध्यक्ष
समस्त कार्यकर्ता, भारतीय जनता पार्टी, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)
जिला पंचायत कबीरधाम, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

राजीव सरोवर से पाटन की
खूबसूरती को लगे चार चांद

» उमा शंकर

पिछले कुछ वर्षों में पाटन का तेजी से कायाकल्प हुआ है. सड़कें तो चौड़ी हुई ही हैं शहर का ऐसा सौन्दर्यीकरण हुआ है कि यहां से गुजरने वाले भी चकित रह जाते हैं. पर शहरवासियों को एक कमी बहुत खलती थी. कोई ऐसी जगह नहीं थी जहां शाम को थोड़ी तफरीह की जाए, जहां खाने-पीने के भी स्टॉल हों. राजीव सरोवर के विकास के साथ ही उनकी यह जरूरत भी पूरी हो गई है. लगभग 5 करोड़ 80 लाख रुपए में शहर के नकटा तालाब का सौन्दर्यीकरण किया गया है. यहां न केवल खूबसूरत हरी-भरी घास वाला पार्क बनाया गया है बल्कि उसके चारों तरफ पाथवे का भी निर्माण किया गया है. खूबसूरत गार्डन लाइट की दूधिया रोशनी में नहाए राजीव सरोवर पार्क की सुन्दरता देखते ही बनती है. लोग यहां मार्निंग और ईवनिंग वॉक के लिए आने लगे हैं. सपरिवार शाम को खुली हवा में सांस लेने की इच्छा रखने वालों के लिए यहां बाकायदा चौपाटी की स्थापना की गई है. इसके शुरू हो जाने से यहां तफरीह के साथ ही भोजन एवं स्वल्पाहार की भी व्यवस्था हो जाएगी. राजीव सरोवर पार्क के पास ही इंडोर स्टेडियम का निर्माण किया जा रहा है. इसपर 9 करोड़ 87 लाख रुपए खर्च किये जायेंगे. यही नहीं, यहां लगभग 5.5 करोड़ की लागत से स्विमिंग पूल तैयार किया जा रहा है जहां गांव के बच्चे तैराकी का प्रशिक्षण प्राप्त कर इस खेल में शहर के साथ ही राज्य का भी नाम रौशन कर सकेंगे. नगर पंचायत अध्यक्ष भूपेन्द्र कश्यप ने कहा कि पाटन जिला तो नहीं, पर उससे कम भी नहीं. यह एक जंक्शन है जहां से होकर रायपुर, धमतरी, दुर्ग, गुण्डरदेही एवं अभनपुर-राजिम को सड़क जाती है. इन सुविधाओं के विकास के साथ अब पाटन में भी महानगरीय सुविधाएं उपलब्ध हो जाएंगी. शहर सहित आसपास के 15-20 गांवों के लोग भी शाम के समय यहां घूमने के अलावा शॉपिंग करने के लिए आते हैं. उन्होंने बताया कि राजीव सरोवर में जल्द ही बोटिंग की सुविधा भी उपलब्ध करा दी जाएगी जिसके बाद यहां के आकर्षण को चार चांद लग जाएंगे.

> पाटन जिला तो नहीं पर जिले से कम भी नहीं :
>
> भूपेन्द्र कश्यप, अध्यक्ष नगर पंचायत पाटन

भूपेश है तो भरोसा है...
प्रदेश की ढाई करोड़ जनता के मान और सम्मान
जन-जन के प्रिय यशस्वी मुख्यमंत्री
श्री भूपेश बघेल जी
को जन्मदिन की
हार्दिक बधाई...
#SUFIART/9407900033
पूरा कर रहे प्रण, गढ़ रहे नवा छत्तीसगढ़
आपका अपना
आकाश अग्रवाल
युवा नेता, राजनांदगांव

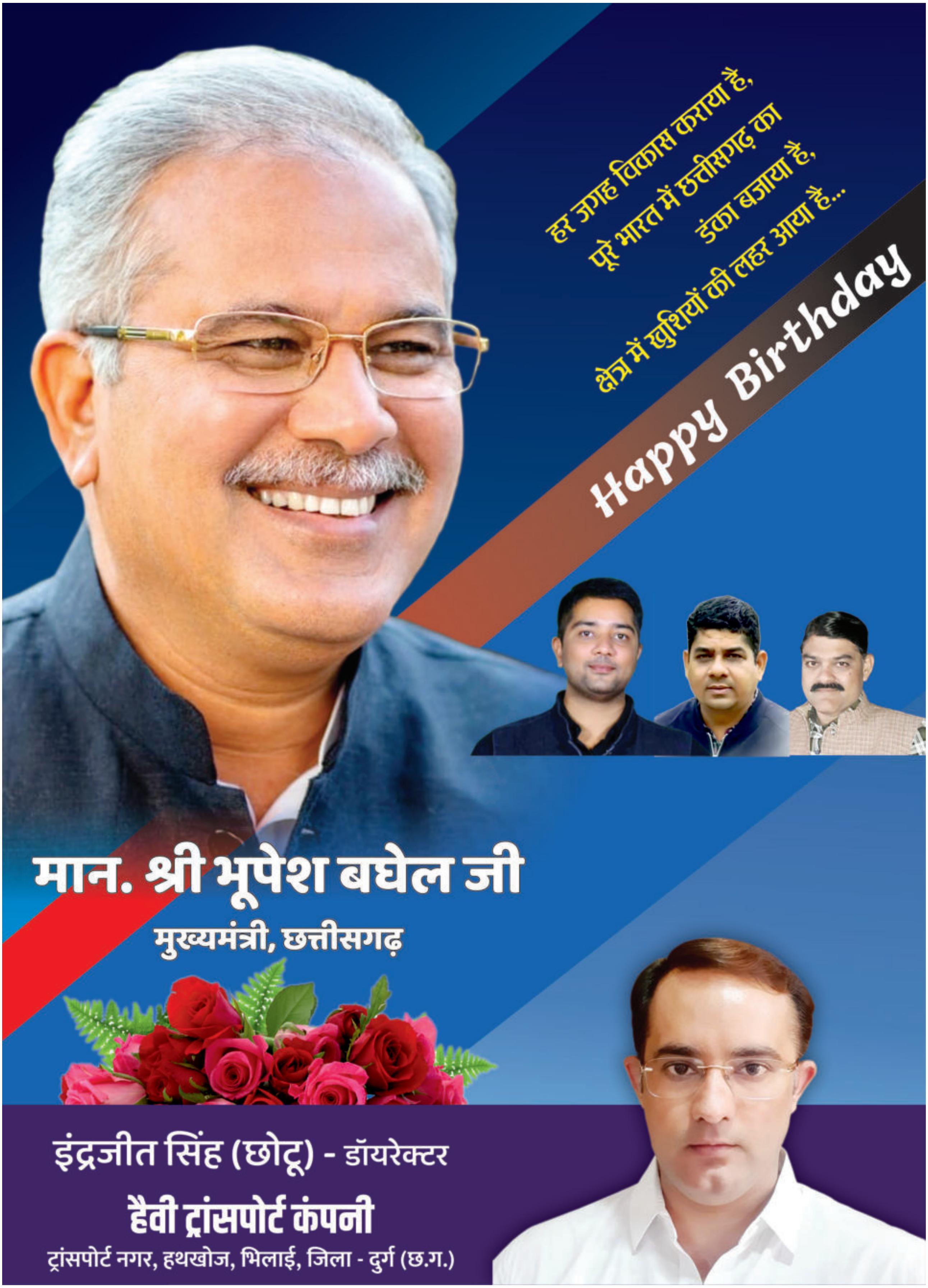
हर जगह विकास कराया है,
पूरे भारत में छत्तीसगढ़ का
डंका बजाया है,
क्षेत्र में खुशियों की लहर आया है...
Happy Birthday
मान. श्री भूपेश बघेल जी
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़
इंद्रजीत सिंह (छोटू) - डॉयरेक्टर
हैवी ट्रांसपोर्ट कंपनी
ट्रांसपोर्ट नगर, हथखोज, भिलाई, जिला - दुर्ग (छ.ग.)

जीवेत शरदः शतम
मान. श्री भूपेश बघेल जी मुख्यमंत्री
को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं...
हर जगह विकास कराया है,
पूरे भारत में छत्तीसगढ़ का डंका बजाया है.
क्षेत्र में खुशियों की लहर आया है...
धर्मेन्द्र यादव
वरिष्ठ कांग्रेस नेता
जिला- दुर्ग (छ.ग.)
देवेन्द्र यादव
विधायक, भिलाई
जिला- दुर्ग (छ.ग.)

गढ़बो नवा पाटन
छत्तीसगढ़ के माटीपुत्र एवं
विकास पुरुष, जन-जन के नेता
माननीय श्री भूपेश बघेल
को जन्मदिन की
हार्दिक बधाई
शुभकामनाएं...
भूपेन्द्र कश्यप
अध्यक्ष, नगर पंचायत पाटन, दुर्ग (छ.ग.)